RNI-MAHBIL/2010/33592

# जैन तीर्थवंदना

| वर्ष : 15 | अंक : 11 | मुम्बई, फरवरी 2026 | पृष्ठ : 32 | मूल्य : 25 | हिन्दी |
|---|---|---|---|---|---|
| VOLUME : 15 | ISSUE : 11 | MUMBAI, FEBRUARY 2026 | PAGES : 32 | PRICE : 25 | English Monthly |


## भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

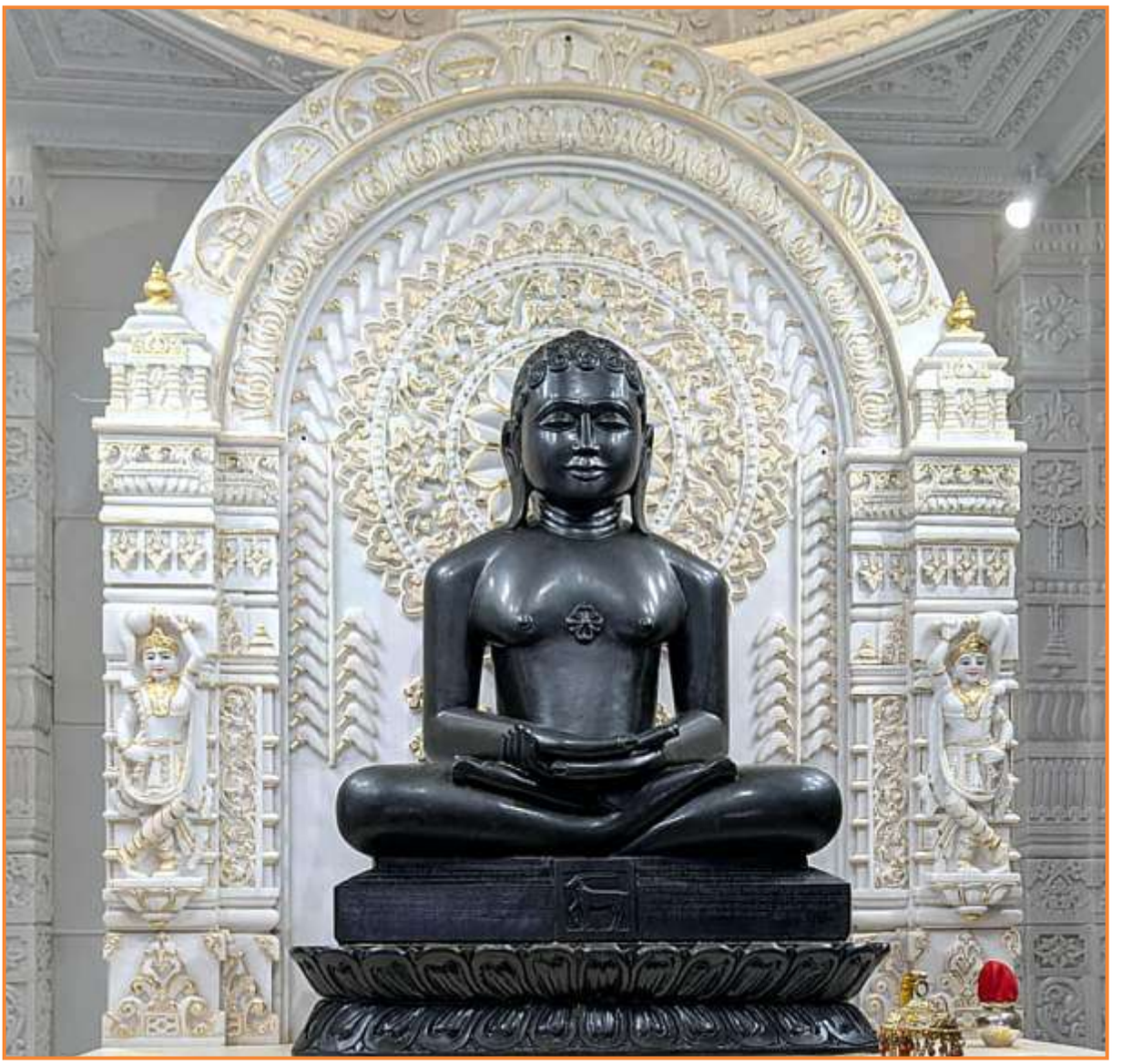

मूलनायक श्री 1008 शांतिनाथ भगवान, नवापारा-राजिम, छत्तीसगढ

# जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

**मुखपत्र**

वर्ष 15 अंक 11 फरवरी 2026



**संपादक मंडल**

**प्रधान संपादक**

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

**संपादक**

श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

**संपादकीय सलाहकार**

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर



कार्यालय

**भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी**

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.

फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com

Website : tirthkshetracommittee.com


'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 00121010110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.


**मूल्य**

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक | : | 300 रुपये |
| त्रिवार्षिक | : | 800 रुपये |
| आजीवन (दस वर्ष) | : | 2500 रुपये |



**विज्ञापन आमंत्रित हैं.**

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।



**वीर निर्वाण संवत् 2552**


## इस अंक में


| | |
|---|---|
| तीर्थंकर ऋषभदेव का 'सनातन' जैनधर्म | 7 |
| तीर्थ की रक्षा = मोक्ष मार्ग की रक्षा | 13 |
| अहं के विसर्जन से महावीरत्व की ओर | 14 |
| ट्रेन का नामकरण "मूकमाटी एक्सप्रेस" एक प्रसंग | 15 |
| बढ़ते मंदिर, सिमटता समाज : आत्ममंथन का समय | 20 |
| पाकिस्तान में 900 वर्ष पुराना जैन मंदिर | 23 |
| गिरनार से चार बड़ी खुशखबरी | 27 |


## "जैन तीर्थवंदना" पत्रिका अब डिजिटल: सीधे आपके मोबाइल पर

माननीय सभी तीर्थप्रेमी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रतिमाह प्रकाशित की जाने वाली **"जैन तीर्थवंदना"** पत्रिका **अप्रैल 2026 से डिजिटल माध्यम (मोबाइल/व्हाट्सऐप) से प्रेषित की जाएगी।** कृपया आप अपना **पूरा नाम एवं सही मोबाइल नंबर 15 मार्च 2026** तक कमेटी कार्यालय में अवश्य जाँच/सुधार करवा लें, ताकि प्रत्येक माह "जैन *तीर्थवंदना*" पत्रिका आपको **समय पर नियमित रूप से** प्राप्त होती रहे।

**भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी**

दूसरा तल, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई- ४००००४,

**संपर्क सूत्र - 9833671770, 9109228683, 7078548210, 7217756871**

**भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये**

| | | | |
|---|---|---|---|
| संरक्षक सदस्य | रु. 5,00,000/- | सम्माननीय सदस्य | रु. 31,000/- |
| परम सम्माननीय सदस्य | रु. 1,00,000/- | आजीवन सदस्य | रु. 11,000/- |

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

# शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष क्यों?

भा॰ दि॰ जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने अपनी स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर आगामी 22.10.26 से 22.10.27 तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनाने का निश्चय किया है। अब प्रश्न उठता है कि किसी संस्था की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर इतना हल्ला क्यों? इस सन्दर्भ में मैं कहना चाहता हूं कि किसी संस्था के सतत् 125 वर्ष तक चलते रहना उसकी आवश्यकता, उपयोगिता एवं संचालन की सुव्यवस्थित रीति को स्पष्ट करता है वरना किसी संस्था की स्थापना के 20-25 वर्षों में ही वे अप्रासंगिक हो जाती हैं एवं शनैः - शनैः दम तोड़ देती हैं। संस्था का 125 वर्षों तक सतत निर्बाध संचालन एवं उसके देश के स्वनाम धन्य श्रेष्ठियों द्वारा उसको नेतृत्व प्रदान करना महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में इस संस्था के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनाने का उद्देश्य क्या है? इस प्रश्न पर मेरा उत्तर स्पष्ट है सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को तीर्थक्षेत्र कमेटी से सक्रियता से जोड़ना। मेरी टीम के सभी कार्यकलाप इसी भावना से अनुप्राणित हैं। उदाहरणार्थ:-

**गुल्लक योजना:** तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा विभिन्न तीर्थों के विकास हेतु अनुदान एवं न्यायालयीन प्रकरणों में दि॰ जैन समाज के पक्ष की सक्षमता से प्रस्तुति आदि हेतु उदारमना श्रेष्ठियों के सहयोग से काम चल ही रहा था किन्तु मैं चाहता था कि प्रत्येक दि॰ जैन बन्धु यह अनुभव कर सके कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के संचालन में मेरा भी योगदान है इस प्रकार वह मन से, गौरव से तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ सकेगा इस हेतु हमने गुल्लक योजना शुरू की है एवं हर तीर्थ, हर मंदिर पर गुल्लक रखवाने का प्रयास किया जा रहा है जो गतिमान है।

**शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के कार्यक्रम:** इस वर्ष के कार्यक्रमों का हमने संयोजन इस रूप में किया है कि युवा, महिला, पत्रकार, बुद्धिजीवी, लेखक, सम्पादक, इतिहासज्ञ आदि सभी इनमें अपनी सहभागिता दे सके। इसी कारण, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन, विद्वत् सम्मेलन आदि की योजनायें बनाई हैं। अलग-अलग अंचलों में पत्रकार सम्मेलन, विद्वत् गोष्ठियों आदि के आयोजन प्रस्तावित हैं। इस सन्दर्भ में हमारे अंचलों को कुछ नये व्यावहारिक सुझाव प्राप्त हो सके एतदर्थ व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता भी आयोजित की जा रही है जिसकी घोषणा अगले अंक में की जायेगी।

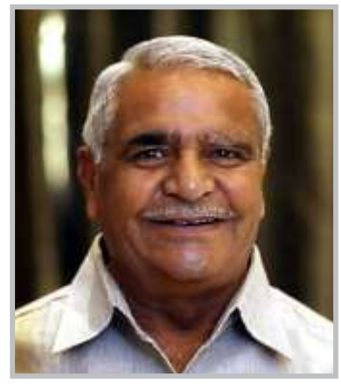

**भारत के दि॰ जैन तीर्थं का पुनर्लेखन: -**

पुनः समाज के प्रबुद्ध लेखकों, पुराविदों, इतिहासज्ञों के सहयोग से हम 50 वर्ष पूर्व प्रकाशित भारत के दि॰ जैन तीर्थ पुस्तक के 5 भागों का पुनर्लेखन भी करा रहे हैं। मूर्धन्य विद्वान एवं कुशल सम्पादक प्रो. अनुपम जैन के सम्पादकत्व में इनके पुनर्लेखन की सम्पूर्ण योजना बनाई जा रही है। जिससे इस पुस्तक को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप तो बनाया ही जा सके, गत् 5-6 दशकों की ऐतिहासिक/पुरातात्विक शोधों को भी इसमें समाहित किया जा सके।

हमारा यह कार्य इतिहास के संरक्षण का एक विनम्र प्रयास है जिसमें हमे अनेक युवा विद्वानों का सहयोग भी लेना होगा।

संक्षेप में शतकोत्तर रजत (125) स्थापना वर्ष के कार्यक्रम समाज को सक्रियता से जोड़ने, उनमें तीर्थों के प्रति आत्मीयता एवं गौरव के भाव को जागृत करने तथा अपने सांस्कृतिक वैभव के संरक्षण का एक विनम्र प्रयास है। मेरा सम्पूर्ण समाज से विनम्र निवेदन है कि आंचलिक समितियों के माध्यम से आप इन कार्यक्रमों से सक्रियता से जुडे, स्वयं को गौरवान्वित करे।

**तीर्थ हमारी शान हैं।**

**तीर्थ रहेंगे तो हम रहेंगे।**

जयजिनेन्द्र।

**जम्बूप्रसाद जैन**
**राष्ट्रीय अध्यक्ष**

**बंधुओं एवं भगिनियों,**

सादर जय जिनेन्द्र!

अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति के साथ यह साझा करते हुए मन हर्षित है कि प्रभु की अनुकम्पा, गुरुओं के आशीर्वाद एवं पूर्व संचित पुण्य के प्रबल उदय से णमोकार तीर्थ में संपन्न इस अलौकिक, दिव्य एवं ऐतिहासिक *पंचकल्याणक* महोत्सव के पावन अवसर पर मुझे एवं मेरी धर्मपत्नी को भगवान के माता–पिता बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह क्षण हमारे जीवन का सर्वोच्च सौभाग्य, परम उपलब्धि तथा जन्म–जन्मांतर के पुण्य का साकार रूप है।

इस मंगल अवसर पर हमें एवं हमारे परिवार को आप सभी से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जो शुभाशीर्वाद एवं शुभ-मंगलकामनाएँ प्राप्त हुई हैं, उनके लिए मैं अपनी ओर से तथा मेरे परिवार की ओर से आप सभी का हृदय से हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

परमपूज्य गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज का मंगलमय सानिध्य, सारस्वताचार्य प्रज्ञाश्रमण श्री देवनंदी जी महाराज की दिव्य प्रेरणा तथा असंख्य साधु-संतों का यह विराट, दुर्लभ एवं ऐतिहासिक संगम—जिसे निहारते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो हम साक्षात् अरिहंत प्रभु के दिव्य समवशरण में उपस्थित हों—यह *पंचकल्याणक महा-महोत्सव* हम सभी के जीवन में एक युगांतकारी, अविस्मरणीय एवं अमूल्य आध्यात्मिक उपलब्धि के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

यह भी अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि समिति की ओर से आमंत्रित हमारे देश के ख्यातिप्राप्त, प्रतिष्ठित एवं पूज्य महानुभावों ने सहर्ष आमंत्रण स्वीकार कर इस पावन आयोजन की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयाँ प्रदान कीं तथा इस स्वर्णिम अवसर के साक्षी बने। माननीय अतिथि महानुभावों में सरसंघ संचालक राष्ट्रीय स्वयं सेवक प्रमुख डॉ. मोहन जी भागवत, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय देवेंद्र फडणवीस जी सहित पधारे सभी अतिथियों जिनके प्रति मैं हृदय से हार्दिक आभार एवं सम्मान व्यक्त करता हूँ।

इस पावन आयोजन में णमोकार **क्षेत्र के माननीय अध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा जी** सपत्नीक *सौधर्म इंद्र-इंद्राणी तथा* **श्री दिनेश सेठी जी को सपत्नीक** *कुबेर* बनने का सौभाग्य ग्रहण किया साथ पंचकल्याणक में विभिन्न पात्रों से इस कार्यक्रम का सफल बनाने वाले सौभाग्यशाली सभी महानुभावों के लिए भी हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

जिनप्रतिष्ठा के इस महा-महोत्सव को भव्य, सफल एवं ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने हेतु महीनों से निरंतर तैयारियाँ की जा रही थीं, जिनमें अनेकों कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके अथक परिश्रम एवं समर्पण की जितनी भी सराहना की जाए, वह कम है। मैं समस्त सहयोगियों, आमंत्रित महानुभावों एवं उपस्थित श्रद्धालुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

# परम्पराओं की रक्षा के अभिनव प्रयास

किसी भी संस्कृति में परम्पराओं का विशेष महत्त्व होता है जो संस्कृति अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा नहीं कर पाती उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। जैन संस्कृति अनादिनिधन सनातन संस्कृति है। भगवान ऋषभदेव से महावीर पर्यन्त 24 तीर्थंकरों एवं परिवर्ती कुन्दकुन्दादि दि० जैन आचार्यों ने इस संस्कृति के विकास में महनीय योगदान दिया है। इसका ज्वलन्त प्रमाण हमारे शाश्वत तीर्थ, अपरिमित ज्ञान के भण्डार हमारे शास्त्र, पाण्डुलिपियॉ तथा धर्मनिष्ठ, संस्कारवान समाज है। अतः तीर्थों एवं अन्यत्र उपलब्ध पुरातात्विक अवशेषों, ज्ञान की अक्षय निधि पाण्डुलिपियों एवं नई पीढ़ी के युवाओं को संस्कारवान एवं सामाजिक जीवन से जोड़े रहना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस हेतु कुछ प्रयास किये जा रहे हैं एवं कुछ किया जाना प्रस्तावित हैं।

**1. झलक जैन संस्कृति आदिनाथ से महावीर:** - देश के अनेक नगरों में चैत्र कृष्ण नवमी अर्थात् आदिनाथ जयन्ती (12.03.26) से चैत्र शुक्ल त्रयोदशी अर्थात् महावीर जयन्ती (30.03.26) तक अनेक धार्मिक/सामाजिक/साहित्यिक/सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। प्रातः काल प्रभात फेरियों से लेकर रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम तक की श्रंखला अलग-अलग स्थानों पर सुविधानुसार रहती है। उद्देश्य होता है युवाओं एवं महिलाओं को इनके माध्यम से जोड़ना। हर आबाल-वृद्ध 24 तीर्थंकरों की महान जैन संस्कृति को जाने एवं उसका गौरव कर स्वयं को जैन संस्कारों से सम्बद्ध बनाये रखेँ। छोटी -छोटी बातें युवाओं/किशोरों के अन्तर्मन को झकझोर देती है। अतः इनमें कुछ व्याख्यान/प्रवचन, परिचर्चाएं, प्रेरणास्पद नाटक, एकांकी, सेवाकार्य आदि कराये। समाज के नेतृत्वकर्ताओं को इन आयोजनों को करने की जिम्मेदारी भी युवाओं/महिलाओं को ही देनी चाहिए। समीपवर्ती तीर्थों की यात्राओं हेतु भी यह समय अनुकूल है। यदि एक भी युवा इनके माध्यम से सामाजिक जीवन से सक्रियता से जुड़ गया तो आपका प्रयास सफल हो जायेगा। यह समय कार्यकताओं के निर्माण का है।

**2. णमोकार तीर्थ का निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा -** परमपूज्य, प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री देवनन्दि जी महाराज की प्रेरणा से पंचपरमेष्ठियों की आराधना के तीर्थ णमोकार (चॉदबड, ए.बी. रोड, जिला नासिक) का निर्माण वर्तमान युग की एक श्रेष्ठ उपलब्धि है। तीर्थंकरों के नाम पर अनेक तीर्थ हैं, सिद्धक्षेत्र हैं, कल्याणक क्षेत्र हैं, अतिशय क्षेत्र हैं किन्तु अनादि निधन शाश्वत मंत्र णमोकार के नाम पर कोई तीर्थ नहीं था। लगभग 27 एकड के विशाल भू-भाग में विकसित यह तीर्थ अनूठा है। लगभग 300 पूज्य संतों (आचार्यों, मुनियों,

आर्यिका माताओं, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं) एवं पूज्य भट्टारक स्वामीगण की उपस्थिति में 6-13 फरवरी 2026 के मध्य यह श्रेष्ठ आयोजन सम्पन्न हुआ। विशाल प्रतिमाओं का महामस्तकाभिषेक अभी चल रहा है जो 25 फरवरी 2026 तक चलेगा।

इस तीर्थ का मुख्य आकर्षण 108 फीट उत्तुंग भव्यातिभव्य बोलता समवसरण है। सभी साधर्मी बन्धुओं को एक बार इस तीर्थ के दर्शन अवश्य करने चाहिए। यहाँ आधुनिक तकनीक का उपयोग कर परम्परा को संरक्षित किया गया है। मूलनायक भ० चन्द्रप्रभ की 32 फीट उत्तुंग विशाल पद्मासन प्रतिमा, अन्य विशाल खड़गासन प्रतिमाओं के साथ पंचपरमेष्ठी प्रतिमाओं की छवि निहारते ही बनती है। क्षेत्र की भावी योजनायें भी युवाओं को आकर्षित करती हैं।

**3. श्री गणेश प्रसाद वर्णी शोध संस्थान वाराणसी -** पं. फूलचन्द जैन शास्त्री ने व्यापक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु भ० पार्श्वनाथ एवं भ० सुपार्श्वनाथ जी की जन्मभूमि वाराणसी में वर्णी शोध संस्थान की स्थापना की थी किन्तु विगत अनेक वर्षो से इस संस्थान के परिसर में स्थित यात्री निवास एवं विद्वत् आवास आदि पर अतिक्रमण हो गया था। पं. जी के सुयोग्य पुत्र एवं रूड़की विश्वविद्यालय में भौतिकी के आचार्य प्रो.अशोक कुमार जैन के प्रयासों से कमेटी के नेतृत्व में इसका जीर्णोद्धार किया गया। भ० पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में यह एक सुन्दर क्षेत्र है जहाँ भव्य जिनमन्दिर, समवशरण, व्यवस्थित पुस्तकालय, सभागृह, शोध संस्थान, यात्री निवास, भोजनालय सब कुछ उपलब्ध है। जैन साहित्य पर शोध एवं अनुसंधान हेतु यह आदर्श स्थान है क्योंकि समीप ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विशाल पुस्तकालय है। काशी विद्वानों की नगरी है यहाँ अनेक जैन विद्वान निवास करते हैं फलतः उनसे चर्चा एवं सम्पर्क भी हो सकता है। काशी में विद्वानों का सान्निध्य एवं सभी आवश्यक सुविधाओं से युक्त होने के कारण वर्णी शोध संस्थान परम्परागत जैन साहित्य के अध्ययन एवं अनुसंधान का एक श्रेष्ठ केन्द्र बन सकता है। इसके पुनरुद्धार का प्रो. अशोक जैन, रूड़की का प्रयास स्तुत्य है। विगतदिनों 1-2 फरवरी को यहाँ जीर्णोद्धारित भवन में Sacred Roots of Jainism शीर्षक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। एतदर्थ प्रमुख आयोजकों में डॉ. संजीव सराफ (वाराणसी), डॉ. मेधावी जैन (गुरुग्राम) एवं श्री कीर्ति कुमार भौंरे (कारंजा) को बधाई। सेमिनार की आख्या अंदर के पृष्ठों में दृष्टव्य है।

**4. अयोध्या तीर्थ में भगवान ऋषभदेव के 101 पुत्रों का जिन मन्दिर** - विगत दिनों 3-4 फरवरी को मुझे 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ के दर्शन का अवसर मिला। भगवान ऋषभदेव की 31 फीट ऊँची विशाल मूर्ति एवं जैन समाज की वरिष्ठतम आर्यिका **गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी** के ससंघ पुनीत दर्शन तो हुए ही वहाँ निर्मित अद्वितीय ऋषभदेव के 101 पुत्रों के मन्दिर का दर्शन कर मन प्रसन्न हो गया। जैन एवं जैनेत्तर दर्शक इस मंदिर को देखकर इतिहास को जानने के लिए प्रवृत्त होते हैं। उन्हें यहाँ यह भी ज्ञात होता है कि भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है। जैनेत्तर बन्धु यह जानकर प्रसन्न होते हैं कि भगवान ऋषभदेव भगवान राम के पूर्वज हैं। एवं राम का जन्म ऋषभदेव के इक्ष्वाकु कुल में ही हुआ था।

परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा से जिस तरह हमारे परम्परागत इतिहास की रक्षा कर उसका प्रचार किया गया है उससे परम्परा की रक्षा हो रही है। हम क्षेत्र के **पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी** से यह अनुरोध करेंगे कि जैन परम्परा को बताने वाले कुछ फोल्डर भी इस मन्दिर पर उपलब्ध कराये जिससे जैनेत्तर यात्री/पर्यटक इतिहास से परिचित हो सके। क्षेत्र पर विराजित प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माता जी का भी मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

संक्षिप्ततः हमें अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को हर हाल में संरक्षित करना होगा। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ आगामी 2-4 अप्रैल 2026 के मध्य-शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विद्वत् सम्मेलन आयोजित कर रहा है। जिसमें प्राचीन सिद्धान्त ग्रंथ षट्खंडागम एवं उसकी सिद्धान्त चिन्तामणि टीका पर विमर्श किया जायेगा। सम्मेलन में षट्खंडागम पर टीकाओं की रचना की श्रंखला पर भी चर्चा होगी। कुन्दकुन्द, शामकुन्ड, समन्तभद्र, तुम्बुलूर, बप्पदेव की परम्परा में ही आचार्य वीरसेन स्वामी ने 816 ई. में धवला टीका का सृजन किया था। अगर टीकाओं के सृजन की यह परम्परा न होती तो गणिनी ज्ञानमती माता जी द्वारा सिद्धान्त चिन्तामणि टीका कैसे लिखी जाती? इस सम्पूर्ण परम्परा की चर्चा विद्वत् सम्मेलन में होगी। सभी सुधीजन सम्मेलन में सहभागिता हेतु आमंत्रित हैं।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष हमारी प्रशस्त परम्पराओं के प्रति जन सामान्य का ध्यान आकृष्ट करने का एक विनम्र प्रयास है। हम इन पृष्ठों पर क्रमशः इन प्रयासों की चर्चा करेंगे।

**डॉ. अनुपम जैन,**
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

# तीर्थंकर ऋषभदेव का 'सनातन' जैनधर्म

प्रो.अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

**सारांश :**

**प्राय: जैन धर्म को किसी अन्य धर्म की शाखा या हिस्सा मानकर या फिर उसकी उत्पत्ति तीर्थंकर महावीर (छठी शती ई.पू.) मान कर और कहकर उसके महत्त्व को सीमित और अर्वाचीन करने की कोशिश की जाती है ,सिर्फ अन्य ही नहीं बल्कि जैन परंपरा के लोग भी जब 'सनातनी' शब्द का प्रयोग करते हैं तो उनका भाव और उद्देश्य भी मात्र वैदिक परंपरा ही होता है,इसके लिए जब मैंने 'सनातन' शब्द की जांच पड़ताल जैन आगमों के परिप्रेक्ष्य में प्रमाण सहित की तो यह निष्कर्ष निकल कर सामने आया कि लोग आज भले ही बहुमत के कारण रूढ़ी से वैदिक धर्मों को सनातनी कहते हों लेकिन उसके ही समानांतर भारत वर्ष में अजस्र रूप से चलने वाली श्रमण धर्म परंपरा ,उसमें भी विशेषकर जैन धर्म परम्परा भी 'सनातनी' कहलाने की वास्तविक हकदार है क्यों कि आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने जिस धर्म सृष्टि का सृजन इस धरा पर किया था वह ही सनातन है -**

**तीर्थकृद्भिरियं सृष्टा धर्मसृष्टिः सनातनी ।**

(आदिपुराण,भाग २,सर्ग ४०,श्लोक १९०)

**'तीर्थंकरों के द्वारा रची गई यह धर्मसृष्टि ही सनातन है ।**

## 'सनातन' क्या है ?

सनातन धर्म कोई संप्रदाय नहीं हो सकता। उत्पत्तियाँ सम्प्रदायों की हो सकती हैं धर्म की नहीं ,इसलिए धर्म हमेशा सनातन ही होता है। इसलिए विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य मुझे यह चर्चा ही व्यर्थ लगती है कि कौन सा संप्रदाय सनातन है ? यह समस्या ही इसलिए खड़ी हुई है कि हमने सम्प्रदायों के नाम धर्म रख दिए हैं जैसे हिन्दूधर्म,जैनधर्म,बौद्धधर्म आदि। यदि आप वास्तव में सनातन धर्म की खोज में निकल पड़े हैं तो आपको बिना किसी आग्रह के इन तीनों सम्प्रदायों के मूल ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन करना होगा और इन इन सम्प्रदायों के द्वारा पैदा की गई समस्त अवधारणाओं और क्रिया कांडों को कुछ पल के लिए उपेक्षित करके उसके अन्दर में स्थित मूल आध्यात्मिक उत्स का दर्शन करने का अभ्यास करना पड़ेगा। सम्प्रदायों द्वारा जो अलग अलग वस्त्र धर्म रुपी आत्मा के शरीर पर समय समय पर पहनाये गए हैं उनका चीर हरण किये बिना आप उसके स्थूल शरीर का भी साक्षात्कार नहीं कर सकते,फिर उसमें विराजमान उस परम शुद्ध स्वरुप अखंड परमात्म तत्त्व भगवान् आत्मा स्वरूपी सत् चित् आनंद स्वरूपी सनातन वस्तुस्वभाव धर्म का साक्षात्कार करने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।

## जैन धर्म क्या है ?

जैन धर्म भी एक धर्म है ,कोई सम्प्रदाय नहीं है किन्तु प्रत्येक संप्रदाय की तरह सांस्कृतिक ,सामाजिक और पारंपरिक रीति रिवाजों से आच्छादित जैन धर्म भी वर्तमान में एक संप्रदाय की तरह ही प्रचलन में है ,उसके पूजा पाठ ,मंदिर ,मूर्ति,तीर्थ,पुरातत्व ,पर्व ,व्रत ,उपवास,तपस्या और मोक्ष साधना पद्धति के अपने मौलिक स्वरुप और दर्शन हैं जो उसे अन्य परम्पराओं से भिन्न करते हैं। अन्य परम्पराओं की तरह उनका अपना एक सुदीर्घ मौलिक इतिहास है , मौलिक संस्कृति है , मौलिक आगम हैं , मौलिक साहित्यिक भण्डार है। साधना के क्षेत्र में उनकी अपनी एक अलग ही निराली गौरवशाली परंपरा है। उसकी दिगंबर परंपरा में नग्न दिगंबर रह कर ,करपात्री बन ,एकभुक्त होकर,बिना किसी अन्य संसाधन के अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक आत्मानुभूति में नित्य रम कर

जन्म मरण से मुक्ति की साधना करना दुनिया के इतिहास में तपस्या का एक अविश्वसनीय उदाहरण है जो आज भी इस ऋषि प्रधान भारत भूमि पर देखा जा सकता है।

मात्र आत्मानुभूति और मुनि चर्या से मनुष्य मोक्ष तो प्राप्त कर सकता है किन्तु इस धरा पर यह मोक्षमार्ग जीवित रहे इसलिए आगम ,ग्रन्थ ,पुराण आदि का सर्जन होता है ,जिनालय देवालय बनते हैं ,पूजन भक्ति होती है और भी अन्य क्रियाएं और परम्पराएँ निर्मित होती हैं जिनका उद्देश्य होता है इस साधना मार्ग को और उस परम लक्ष्य को जीवित रखा जाए। ये समस्त चीजें साधन हैं किन्तु साध्य है आत्मधर्म जो कि सनातन है। संप्रदाय कारण है ,साधन है और कार्य या साध्य है आत्मानुभूति। कारण में कार्य का आरोप करके कथन करने की पद्धति भारतीय परंपरा में सदैव से विद्यमान रही है अतः उस संप्रदाय को भी सनातन कहा जाने लगा। आत्मानुभूति की बात ही मुख्य रूप से जैनधर्म करता है और इसके समस्त धार्मिक क्रिया कलाप जैसे सामयिक ,प्रतिक्रमण ,पूजन ,अभिषेक ,स्वाध्याय ,संयम, तप आदि इसी एक मात्र मुख्य उद्देश्य को लेकर ही करने का विधान है अतः जैन धर्म मूलतः सम्प्रदाय आदि समस्त भेद प्रभेदों से परे एक शुद्ध आत्मानुभूति का शाश्वत सनातन मार्ग प्रतिपादित करता है ।

## जैन आगमों में सनातन

जैन परंपरा में प्राकृत के मूल आगम तथा अन्य संस्कृत आदि ग्रंथों में सनातन शब्द का प्रयोग भी हुआ है किन्तु एक नहीं बल्कि हजारों बार सनातन के अर्थ में अनादिनिधन शब्द का प्रयोग हुआ है। अनादिनिधन शब्द का वही अर्थ है जो सनातन का है अर्थात् जिसका आरम्भ और समाप्ति न हो,नित्य ,शाश्वत ,स्थायी ।

तीर्थंकर भगवान् महावीर की वाणी द्वादशांग रूप में उपलब्ध है ,उनके द्वारा उपदिष्ट प्राकृत आगम सूत्रकृतांग जिसकी मान्यता है कि छठी शती पूर्व भगवान् ने कहा था ,में सर्वप्रथम '**सणातण**' (**सनातन**) शब्द का प्रयोग हुआ है। वहाँ दूसरे स्कंध में छठा अध्ययन है 'आद्रकीय',जो कि एक राजकुमार थे और बाद में प्रव्रजित होकर जैन मुनि बनकर भगवान् महावीर के समवशरण में जाते हैं तब उसके पहले अन्यान्य तत्कालीन दार्शनिक और मत वाले उसे रास्ते में मिलते हैं और उससे तर्क वितर्क करके उसे अपने संप्रदाय में दीक्षित करने का यत्न करते हैं ,वे सभी की शंका का समाधान कर समवशरण में चले जाते हैं। उसमें एक सांख्य मत वाला परिव्राजक उनसे कहता है - हे आद्रकुमार , तुम्हारा और हमारा धर्म समान है। हम दोनों धर्म में समुत्थित हैं,इस धर्म में हम स्थित हैं और

भविष्य में रहेंगे ।आचार ,शील और ज्ञान भी हमारा समान है। तथा परलोक के विषय में भी हमारा कोई मतभेद नहीं है। वह कहता है कि जिस प्रकार आर्हत दर्शन में आत्मा को अव्यक्त ,महान ,सनातन ,अक्षय,अव्यय तथा प्रत्येक शरीर में समान रूप से स्थित मानते हैं वैसे ही हम भी मानते हैं -

**अव्वत्तरुवं पुरिसं महंतं ,सणातण अक्खयमव्वयं च।**
**सव्वेसु भूएसु वि सव्वओ से ,चंदो व तराहिं समत्तरूवे ॥**

ईसा से छठी शताब्दी पूर्व सूत्रकृतांग में '**सणातण**' शब्द का प्रयोग एक खास मायने रखता है।

प्रथम शती में आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने प्राकृत परमागमों में इसके लिए अनादिनिधन शब्द का प्रयोग किया है – इदि जिणवरेहिं भणिदो **अणादिणिधणो** ,इसी तरह भावपाहुड में वे जीव को अनादिनिधन कह कर **सनातन** कह रहे हैं–

**कत्ता भोइ अमुत्तो सरीरमित्तो अणाइणिहणो य।**
**दंसणणाणुवओगो णिद्दिट्ठो जिणवरिंदेहिं ॥**

फिर अनादिनिधन(सनातन )आत्मस्वरुप के चिंतवन का उपदेश भी दे रहे हैं -

**भावहि पढं तच्चं बिदियं तदियं चउत्थ पंचमयं।**
**तियरणसुद्धो अप्पं अणाइणिहणं तिवग्गहरं ॥**

**अर्थ** - हे मुने ! तू प्रथम तो जीवतत्त्व का चिन्तन कर, द्वितीय अजीवतत्त्व का चिन्तन कर, तृतीय आस्रव तत्त्व का चिंतन कर, चतुर्थ बन्धतत्त्व का चिन्तन कर, पंचम संवरतत्त्व का चिन्तन कर और त्रिकरण अर्थात् मन वचन काय, कृत कारित अनुमोदना से शुद्ध होकर आत्मस्वरूप का चिन्तन कर जो आत्मा अनादिनिधन है और त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ तथा काम इनको हरने वाला है।

प्राचीनतम साहित्य वेद के इस मन्त्र पर यदि हम दृष्टिपात करें तो इसमें नग्न(दिगंबर ) ,ब्रह्म(आत्म स्वरुप), सनातन और आर्हत शब्द का प्रयोग एक ही मन्त्र में हो रहा है जिसे पढ़कर ऐसा लगता है मानो

अनादिनिधन सनातन दिगम्बर जैन (आर्हत) आदित्य वर्ण पुरुष (ऋषभदेव ) की शरण की बात कही जा रही हो –

**ॐ नग्नं सुधीरं दिग्वाससं। ब्रह्मगर्भ सनातनं उपैमि वीरं। पुरुषमर्हतमादित्य वर्णं तसमः पुरस्तात् स्वाहा।।**

**अर्थ**- मैं नग्न धीर वीर दिगम्बर ब्रह्मरूप सनातन अर्हत आदित्यवर्ण पुरुष की शरण को प्राप्त होता हूँ।

जिनसेनाचार्य (नौवीं शती ईश्वी) ने हरिवंशपुराण में '**जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साद्यनाद्यथ शासनम्**' कह कर यह स्पष्ट किया कि द्रव्य दृष्टि (आत्म स्वभाव की दृष्टि से )से जैन धर्म अनादि है और पर्याय दृष्टि (इस अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव ने इसका प्रवर्तन किया –इस दृष्टि से) यह आदि है। जैन धर्म मुख्य रूप से पूर्ण आत्म विशुद्धि का ही धर्म है अतः यह अनादि से है ,सनातन है। जैन धर्म में अहिंसा आदि पांच अणुव्रत और महाव्रत को धर्म कहा गया है। आदिपुराण में आचार्य जिनसेन इसे ही **सनातन धर्म** कह रहे हैं –

**अहिंसा सत्यवादित्वमचौर्यं त्यक्तकामता।**
**निष्परिग्रहता चेति प्रोक्तो धर्मः सनातनः।।**

यही नहीं बल्कि अकृत्रिम जिनालयों (जैन मंदिरों) को भी आप **अनादिनिधन शाश्वत** और **सनातन** मानते हैं –

**अकृत्रिमाननाद्यन्तान् नित्यालोकान् सुराचिन्तान्।**
**जिनालयान् समासाद्य स परां मुदमाययौ।।**

गुणभद्राचार्य ने उत्तरपुराण में एक कथा के प्रसंग में जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा प्रतिपादित आत्मधर्म को **सनातन** शब्द से ही कहा है –

**गतोऽमित प्रभार्हद्भ्यःश्रुत्वा धर्म सनातनम्।**
**मत्पूर्वं भवसंबन्धम प्राक्षमवदंश्च ते।।**

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रवर्तित अहिंसा स्वरूपी आत्मधर्म की व्याख्या अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने की और उनके समकालीन महात्मा बुद्ध ने भी आत्म धर्म अहिंसा का समर्थन किया और कहा कि वास्तव में, इस संसार में घृणा कभी भी घृणा से शांत नहीं होती।

यह केवल प्रेम-कृपा से ही प्रसन्न होता है। ये सनातन धर्म है-

**न हि वेरेण वेरानि सम्मन्तिधा कुदाकनं**
**अवेरेना च सम्मन्ति एसा धम्मो सनन्तनो।**

पहले महात्मा बुद्ध से सनातन जैन धर्म का गहरा सम्बन्ध था। बुद्ध के चाचा 'वप्प' तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। बौद्ध ग्रन्थ अगुत्तर निकाय में चातुर्याम धर्म का उल्लेख आता है ,चातुर्याम अर्थात् अहिंसा,सत्य,अचौर्य और अपरिग्रह। बुद्ध सबसे पहले जिस धर्म में दीक्षित हुए ,जिसके अनुसार कठोर तप किया वह तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चातुर्याम धर्म था।

ओशो ने 'एस धम्मो सनंतनो' की बहुत व्याख्या की और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक भी इसी नाम से है ,तो प्रायः आम अवधारणा यह फ़ैल गई

कि सनातन शब्द का प्रयोग सबसे पहले महात्मा बुद्ध ने किया था ,जबकि जैन आगमों एवं प्राचीन वैदिक साहित्य में इसके पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं जो महात्मा बुद्ध से भी ज्यादा प्राचीन हैं। फिर भी हमें शब्द पर ध्यान देने की अपेक्षा उसके भाव पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए ,उपलब्ध शब्द और संज्ञाएँ तो अर्वाचीन भी हो सकते हैं लेकिन जो ध्रुव है ,शाश्वत है ,अनादिनिधन है वह सनातन है –यह अर्थ तो नहीं बदलता है न।

**तीर्थंकर ऋषभदेव और सनातन**

साहित्य में सनातन संज्ञा किसी न किसी के नाम के रूप में भी प्रयुक्त होती रही है। तीर्थंकर और देवी देवताओं के नाम के पर्यायवाची के रूप में यह संज्ञा विद्यमान रही है ,जैसे ऋषभ,आदिनाथ शिव,विष्णु,लक्ष्मी,दुर्गा,लक्ष्मी,पार्वती,सरस्वती आदि। तैत्तिरिय संहिता में एक देवशास्त्रीय ऋषि का नाम सनातन है। आचार्य जिनसेन ने तीर्थंकर ऋषभदेव की एक हजार आठ नामों से जो स्तुति की है उसमें उनका एक नाम **सनातन** भी कहा है –

**युगादिपुरुषो ब्रह्म पञ्चब्रह्ममयः शिवः।**
**परः परस्तरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः।।**

अर्थात् - हे प्रभु आदिनाथ ,आप सदा से ही विद्यमान रहते हैं इसलिए **सनातन** कहे जाते हैं। इसी प्रकार उन्होंने आगे ऋषभदेव को आदि अंत रहित होने से अनादि-निधन कहा है-

**अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्त्वाग् व्यक्तशासनः**

आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में कई स्थलों पर ऋषभदेव को सनातन कहा है ,बीसवें पर्व में जब ऋषभदेव वन से हस्तिनापुर वापस आते हैं लोग कहते हैं कि **सनातन** भगवान् ऋषभदेव केवल हम लोगों पर अनुग्रह करने के लिए ही वन-प्रदेश से वापस लौट रहे हैं –

**वनप्रदेशाद् भगवान् प्रत्यावृत्तः सनातनः ।**
**अनुगृहीतुमेवास्मानित्यूचुः केचनोचितम् ॥**

वे ऋषभदेव को लक्ष्य करके कहते हैं कि संसार का कोई पितामह है ऐसा जो हम लोग केवल कानों से सुनते थे ,वे ही **सनातन पितामह** भाग्य से आज हम लोगों को प्रत्यक्ष हो रहे हैं -

**श्रूयते यः श्रुतश्रूत्या जगदेकपितामहः।**
**स नः सनातनो दिष्टया यातः प्रत्यक्षसंनिधिम् ॥**

**जैन धर्म की सनातनता**

जैन आगमों में यह बतलाया गया है कि यह धर्म अनादि से है और अनंत काल तक रहेगा । सम्पूर्ण काल चक्र के दो विभाग हैं एक उत्सर्पिणी और दूसरा अवसर्पिणी । इस प्रत्येक भाग के छह छह आरे हैं । उत्सर्पिणी काल में धर्म की क्रमशः वृद्धि होती है और अवसर्पिणी काल में धर्म का क्रमशः ह्रास होता है । प्रत्येक काल में चौबीस तीर्थंकर होते हैं जो उस सनातन जैन धर्म का मात्र प्रवर्तन करते हैं ,उसका निर्माण नहीं करते हैं । अभी अवसर्पिणी काल का पांचवां आरा चल रहा है । चौथे आरे में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर हुए । भूतकाल के चौबीस तीर्थंकर के नाम और भविष्य में होने वाले तीर्थंकरों के नाम भी भिन्न होते हैं जिनका जैन आगमों में उल्लेख है । इस जम्बूद्वीप के भरत और ऐरावत इन दो वर्षों या क्षेत्रों में एक साथ अर्हंत या तीर्थंकर वंशों की उत्पत्ति अतीत में हुई है, वर्तमान में हो रही है और भविष्य में भी इसी प्रकार होती रहेगी-

**जंबूदीवे भरहेरावएसु वासेसु, एगसमए एगजुगे दो। अरहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जिंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।**

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में यह भी लिखा है कि सर्वज्ञ भगवान् तीर्थंकर के मुख से निकला शाश्वत धर्म ,पूर्वापर विरोध रहित है तथा यह द्वादशांग श्रुत अर्थात् जैनागम को अक्षय तथा अनादिनिधन कहा गया है-

**सव्वण्हुमुहविणिग्गय, पुव्वावरदोसरहिदपरिसुद्धं ।**
**अक्खयमणाहिणिहणं, सुदणाणपमाणं णिद्दिट्ठं ॥**

**अनादि सनातन णमोकार महामंत्र और ॐ**

सनातन की एक विशिष्ट पहचान ॐ बीजमंत्र भी माना जाता है । एक प्रसिद्ध प्राकृत ग्रन्थ दव्वसंगहो में इसका अर्थ भी बताया गया है तथा यह बताया गया है कि ॐ का गठन किस तरह हुआ है –

**अरहंता असरीरा आइरिया तह उवज्झया मुणिणो।**
**पढमक्खरणिप्पणो ओंकारो पंचपरमेट्ठी।।**

जैनागम में अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु अर्थात् मुनि रूप पाँच परमेष्ठी ही आराध्य माने गए हैं। इनके आद्य अक्षरों को परस्पर मिलाने पर 'ओम्'/'ओं' बन जाता है। यथा, इनमें से प्रथम परमेष्ठी 'अरिहन्त' या 'अर्हन्त' का प्रथम अक्षर 'अ' को लिया जाता है। द्वितीय परमेष्ठी 'सिद्ध' है, जो शरीर रहित होने से 'अशरीरी' कहलाते हैं। अत: 'अशरीरी' के प्रथम अक्षर 'अ' को अरिहन्त' के 'अ' से मिलाने पर अ+अ='आ' बन जाता है। उसमें तृतीय परमेष्ठी 'आचार्य' का प्रथम अक्षर 'आ' मिलाने पर आ+आ मिलकर 'आ' ही शेष रहता है। उसमें चतुर्थ परमेष्ठी 'उपाध्याय' का पहला अक्षर 'उ' को मिलाने पर आ+उ मिलकर 'ओ' हो जाता है। अंतिम पाँचवें परमेष्ठी 'साधु' को जैनागम में मुनि भी कहा जाता है। अत: मुनि के प्रारंभिक अक्षर 'म्' को 'ओ' से मिलाने पर ओ+म् = 'ओम्' या 'ओं' बन जाता है। इसे ही प्राचीन लिपि में ॐ के रूप में बनाया जाता रहा है।यह मन्त्र अनादि से है –

**ध्यायतो अनादिसंसिद्धान् वर्णानेतान् यथाविधि...**

इस मन्त्र की एक विशेषता यह है कि गुणों को और उस गुण के आधार पर निर्धारित पद पर विराजमान शुद्धात्माओं को नमस्कार किया गया है –जो किसी संप्रदाय से नहीं है ।इस मन्त्र का उल्लेख सम्राट खारवेल के विश्व प्रसिद्ध प्राचीन शिलालेख में किया गया है जो उड़ीसा की उदय गिरी खंड गिरी गुफाओं में हैं।

**आत्मधर्म ही सनातन है**

धर्म को लेकर जैन धर्म ने किसी संप्रदाय की बात नहीं कही बल्कि वस्तु के स्वभाव,क्षमा आदि भाव,रत्नत्रय और जीव रक्षा को सनातन धर्म कहा है –

**धम्मो वत्थु-सहावो, खमादि-भावो य दस-विहो धम्मो ।**
**रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो।।**

आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने आत्मा और आत्मधर्म को शाश्वत सनातन कहा है और यह भी कहा है कि इसके अलावा अन्य सभी संयोग मुझसे बाह्य हैं –

**एगो मे सासओ अप्पा, णाणदंसणसंजुओ ।**
**सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ।।**

आचार्य शुभचंद्र (ग्यारहवी शती ईश्वी )ने आत्मधर्म को ही सनातन कहा है –

**यो विशुद्ध : प्रसिद्धात्मा परं ज्योतिः सनातनः।**
**सोऽहं तस्मात्प्रपश्यामि स्वस्मिन्नात्मानमच्युतम्।।**

निर्मल है और प्रसिद्ध है आत्मस्वरूप जिसका, ऐसा परमज्योति **सनातन** जो सुनने में आता है ऐसा मैं आत्मा हूँ, इस कारण मैं अपने में ही अविनाशी परमात्मतत्त्व को देखता हूँ। आगे वे शुद्धात्मा में सदैव लीन रहने वाले परमपद में स्थित ,उत्कृष्ट ज्ञान ज्योति से सहित ,परिपूर्ण ,सनातन ,संसार रूप समुद्र से पार को प्राप्त ,कृत कृत और स्थिर स्थिति से संयुक्त सिद्ध परमात्मा को सनातन कहा है जो अतिशय संतुष्ट होकर सदा तीन लोक के शिखर (लोकाग्र)सिद्धालय में सदा विराजमान है -

**परमेष्ठी परं ज्योतिः परिपूर्णः सनातनः।**
**संसारसागरोत्तीर्णः कृतकृत्योऽचलस्थितिः।।**

इसीप्रकार सहजपरमात्मतत्त्व में समस्त पर भावों से भिन्न एक मात्र शुद्धात्मा को सनातन कहा है -

**भिन्नं समस्तपरतः परभावतश्च पूर्णं सनातनमनंतमखंडमेकम् ।**
**निक्षेपमाननयसर्वविकल्पदूरं शुद्धं चिदस्मि सहजं परमात्मतत्त्वम् ।**
**।**

प्रभाचन्द्राचार्य(११ई.) कृत तत्त्वार्थसूत्र का मंगलाचरण भी कह रहा है कि मोक्षमार्ग ही सनातन है -

**सद्दृष्टिज्ञानवृत्तात्मा मोक्षमार्गः सनातनः ।**
**आविरासीद्यत्तो वन्दे तमहं वीरमच्युतम् ।। १ ।।**

सम्यग्दर्शन ,सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र रूप सनातन मोक्षमार्ग जिसके उपदेश से प्रगट हुआ है उस अच्युत वीर की मैं वंदना करता हूँ।

अंत में आचार्य जिनसेन (९ ई.) के इस महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ के साथ मैं विचारक जगत एवं सच्चे अनुसन्धाताओं के समक्ष एक सार्थक विमर्श की शुरुआत करना चाहता हूँ–

**तीर्थकृद्भिरियं सृष्टा धर्मसृष्टिः सनातनी ।**
**'तीर्थंकरों के द्वारा रची गई यह धर्मसृष्टि ही सनातन है ।'**

इस प्रकार सैकड़ों नहीं बल्कि हजारों सन्दर्भ प्राचीन प्राकृत,संस्कृत,अपभ्रंश भाषा में लिखे जैन ग्रंथों में खोजे जा सकते हैं। इसी प्रकार तमिल,कन्नड़,राजस्थानी,गुजराती,हिंदी आदि अन्यान्य भारतीय भाषाओं में रचित हजारों ग्रंथों में भी इसके प्रमाण उपलब्ध हो जायेंगे।

### आधुनिक युग में सनातन जैनत्व

हम जैन धर्म को सनातन कहने की यह जो प्रामाणिक चर्चा कर रहे हैं ऐसा नहीं है कि यह आज कोई नई बात कह रहे हैं ,लगभग १०० पूर्व प्रकाशित जैन साहित्य देखते हैं तो पता चलता है कि जैन विद्वान् इस तरह की बात पहले कहते आये हैं। मुंबई के सुप्रसिद्ध निर्णयसागर प्रेस से १९०५ के दौरान जैन ग्रंथों के प्रकाशन हेतु एक ग्रन्थमाला की शुरुआत हुई थी जिसका नाम ही **'सनातन जैन ग्रन्थमाला'** था,१९२४ में श्रीमान चम्पतरायजी जैन बैरिस्टर ,हरदोई ने एक १०२ पृष्ठ की पुस्तक लिखी थी जिसका नाम था **'सनातन जैन धर्म'** , १९२७ में भगवान् महावीर जन्मोत्सव पर ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी ने एक 60 पृष्ठ की **'सनातन जैनमत'** नाम से एक पुस्तक लिखी जिसे प्रेमचंद जैन ,दिल्ली ने प्रकाशित करवाया था ,उसकी भूमिका में वे स्पष्ट लिखते हैं कि **'अब सर्व जैनों को मिलकर सनातन जैनमत की रीति से चलना चाहिए व इसका प्रचार करके करोड़ों मानवों को जैन धर्म का लाभ देना चाहिए'** (**पृष्ठ** २) ,मेरे पिताजी प्रो.फूलचंद जैन प्रेमी जी ,वाराणसी ने भी मुझे बताया कि बहुत पहले एक पत्रिका भी नियमित प्रकाशित होती थी ,उसका नाम था **'सनातन जैन धर्म'** ,किन्तु कालांतर में उसका प्रकाशन नियमित न रह सका।

निष्कर्ष यह है कि आत्मा सनातन है और उसकी विशुद्धि का मार्ग सनातन धर्म है ,चूँकि जैनधर्म मूलतः यही प्रतिपादित करता है इसलिए तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित जैनधर्म सनातन धर्म है-

**उसहवीरपण्णत्तो अहिंसाणुकम्पो संजमो तवो ।**
**वत्थुसहावो धम्मो जइणअप्पधम्मसणंतणो ।।**

तीर्थंकर ऋषभदेव एवं तीर्थंकर महावीर द्वारा अहिंसा , अनुकम्पा ,संयम,तप तथा वस्तु स्वभाव धर्म रूप जैन परंपरा सम्मत आत्मधर्म सनातन धर्म है

## भद्दलपुर, इटखोरी क्षेत्र में 01 फरवरी 2026 से 05 फरवरी 2026 तक पंचकल्याणक सम्पन्न

जैन धर्म के 10वें तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 भगवान शीतलनाथ जी की गर्भ जन्म कल्याण स्थली भद्दलपुर के इटखोरी क्षेत्र में 01 फरवरी 2026 से 05 फरवरी 2026 तक हुए पंचकल्याणक का आयोजन जैन धर्म की आस्था श्रद्धा और संस्कारों का एक अद्वितीय महोत्सव रहा। यह आयोजन सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि आत्मशुद्धि, अहिंसा, संयम और मोक्षमार्ग की प्रेरणा का जीवन प्रतिक बना। पंचकल्याणक के पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा बिहार - झारखण्ड अंचल को दिए अनुदान राशि से नवनिर्मित भोजनशाला का प्रारम्भ भी किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी, गाजियाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन जी, अहमदाबाद, शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद आदि अनेकों पदाधिकारियों ने पंचकल्याणक में भागीदारी कर धर्म लाभ लिया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी, गाजियाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन जी, अहमदाबाद, शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद, श्री राजकुमार जैन अजमेरा, महामंत्री श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट, श्री मनोज जैन, धनबाद, श्री महेन्द्र जैन सी.ए., रांची, श्री शरद जैन, सांध्य महालक्ष्मी तथा स्थानीय समाज के अनेकों प्रबुद्धजनों के साथ तीर्थक्षेत्रों से संबंधित कार्यो पर विचार विमर्श किया तथा श्री क्षेत्र में बन रहे बहुउद्शीय भवन के विकास कार्यों का निरीक्षण किया।

# राष्ट्रपति भवन में 'ग्रंथ कुटीर' और भारत की ज्ञान-परंपरा: प्राकृत भाषा की राष्ट्रीय प्रतिष्ठा

राष्ट्रपति भवन परिसर में 23 जनवरी 2026 को 'ग्रंथ कुटीर' का उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा किया जाना भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण और दूरगामी अर्थ रखने वाला क्षण है। यह पहल केवल एक संग्रहालय या पुस्तकालय की स्थापना नहीं, बल्कि भारत की बौद्धिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक विरासत के पुनर्स्मरण का सशक्त प्रतीक है।

ग्रंथ कुटीर में भारत की 11 शास्त्रीय भाषाओं—तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, ओडिया, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बांग्ला—में उपलब्ध पांडुलिपियों और पुस्तकों का समृद्ध संग्रह संजोया गया है। इस कुटीर में लगभग 2,300 पुस्तकों के साथ-साथ लगभग 50 दुर्लभ पांडुलिपियाँ भी संरक्षित हैं। इनमें से अनेक पांडुलिपियाँ ताड़पत्र, पारंपरिक हस्तनिर्मित कागज, छाल और वस्त्र जैसे प्राचीन माध्यमों पर हस्तलिखित हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की अनुशासित लेखन संस्कृति और संरक्षण-दृष्टि को सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं।

ग्रंथ कुटीर का यह संग्रह महाकाव्य, दर्शन, भाषा-विज्ञान, इतिहास, शासन, विज्ञान और भक्ति साहित्य जैसे विविध विषयों को समाहित करता है। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इन शास्त्रीय भाषाओं में भारत के संविधान की प्रतियाँ भी इस संग्रह का हिस्सा हैं, जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक लोकतांत्रिक चेतना के बीच सेतु का कार्य करती हैं।

गौरतलब है कि भारत सरकार द्वारा 3 अक्टूबर 2024 को मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बांग्ला भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। इससे पूर्व छह भाषाएँ ही इस श्रेणी में सम्मिलित थीं। 'ग्रंथ कुटीर' में इन नव-मान्य शास्त्रीय भाषाओं को सम्मानजनक स्थान मिलना भारत की सांस्कृतिक नीति में आए एक सकारात्मक और संतुलित परिवर्तन को रेखांकित करता है।

उद्घाटन अवसर पर राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि ग्रंथ कुटीर भारत की शास्त्रीय भाषाओं के संरक्षण और प्रचार के लिए राष्ट्रपति भवन के सामूहिक प्रयासों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में इस कुटीर का संग्रह निरंतर समृद्ध होता जाएगा और यह स्थान विशेष रूप से युवाओं को भारत की शास्त्रीय भाषाओं को जानने, समझने और उनसे जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।

वस्तुतः, 23 जनवरी 2026 को ग्रंथ कुटीर का उद्घाटन केवल एक औपचारिक सांस्कृतिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह भारत की बौद्धिक और आध्यात्मिक आत्मा की ओर लौटने का प्रतीकात्मक संकेत है। राष्ट्र के सर्वोच्च संवैधानिक संस्थान में जैन दर्शन, प्राकृत भाषा और श्रमण परंपरा से जुड़े ग्रंथों को स्थान मिलना इस तथ्य को उजागर करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की मुख्यधारा अब अपने मूल स्रोतों को पुनः पहचानने लगी है।

औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय दर्शन को प्रायः संस्कृत-केंद्रित या आधुनिक दृष्टिकोणों तक सीमित कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप श्रमण परंपरा, लोकभाषाएँ और नैतिक दर्शन हाशिए पर चले गए। ग्रंथ कुटीर की स्थापना इस ऐतिहासिक असंतुलन को सुधारने की दिशा में एक सार्थक और विचारोत्तेजक हस्तक्षेप है। यह स्पष्ट करती है कि भारतीय दर्शन की जड़ें केवल सत्ता-संरचनाओं में नहीं, बल्कि तप, त्याग, अहिंसा और आत्मानुशासन पर आधारित साधना-परंपराओं में निहित हैं।

प्राकृत भाषा को शास्त्रीय दर्जा दिए जाने के पश्चात राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में प्राकृत जैन ग्रंथों को गरिमामय स्थान मिलना सांस्कृतिक नीति के स्तर पर एक स्पष्ट संदेश देता है। यह स्वीकारोक्ति है कि प्राकृत भाषा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन की जीवंत संवाहक रही है, जिसने आत्मा, कर्म और मोक्ष जैसे गूढ़ दार्शनिक विषयों को लोकबोधगम्य भाषा में अभिव्यक्त किया।

ग्रंथ कुटीर में आचार्य कुंदकुंद देव द्वारा रचित समयसार और प्रवचनसार को स्थान दिया जाना विशेष महत्व रखता है। ये ग्रंथ जैन दर्शन को एक स्वतंत्र, तर्कप्रधान और वैज्ञानिक दार्शनिक प्रणाली के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। आत्मा के शुद्ध स्वरूप तथा निश्चय-व्यवहार नय की सूक्ष्म व्याख्या आज के भौतिकतावादी और उपभोक्तावादी समाज के लिए भी गहन आत्ममंथन का अवसर प्रदान करती है। इसी प्रकार गोम्मटसार जैसे ग्रंथ जैन

कर्म सिद्धांत को केवल आस्था नहीं, बल्कि नैतिक और गणनात्मक विवेक पर आधारित सुव्यवस्थित चिंतन-पद्धति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

कुल मिलाकर, ग्रंथ कुटीर की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि यह औपनिवेशिक बौद्धिक विरासत से आगे बढ़कर भारतीय ज्ञान परंपरा को उसके स्वदेशी संदर्भ में पुनः स्थापित करता है। राष्ट्रपति भवन जैसे राष्ट्रीय प्रतीक स्थल में जैन दर्शन और प्राकृत साहित्य की उपस्थिति यह संकेत देती है कि भारतीय संस्कृति की आत्मा सत्ता से नहीं, साधना से निर्मित हुई है।

आवश्यक है कि यह पहल प्रतीकात्मक स्तर तक सीमित न रह जाए। इसे अकादमिक अनुसंधान, शिक्षा नीति और सार्वजनिक सांस्कृतिक संवाद से जोड़ा जाए, ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा जीवंत विमर्श का अंग बन सके। यदि 'ग्रंथ कुटीर' विचार-केंद्र के रूप में विकसित होता है, तो यह न केवल अतीत के संरक्षण का माध्यम बनेगा, बल्कि भविष्य की वैचारिक दिशा भी निर्धारित करेगा।

## तीर्थ की रक्षा = मोक्ष मार्ग की रक्षा
## तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी की पवित्रता और संरक्षण हेतु

सम्मेद शिखरजी 20 तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि है। यह हमारी आस्था, संस्कार और आत्मा की शुद्धि का स्थल है। यह तीर्थ पर्यटक स्थल नहीं है, यह मोक्षधाम है! सभी यात्रियों से निवेदन है कि—

1. रात्रि भोजन का त्याग करें, यह तप की भूमि है, यहाँ संयम आवश्यक है।

2. पहाड़ की सुरक्षा, पवित्रता एवं संरक्षण हेतु पहाड़ पर कोई वस्तु ना खरीदे।

3. वंदना के समय खाने पीने का त्याग रखें यह आपके संयम एवं त्याग के साथ-साथ तीर्थ क्षेत्र की सुरक्षा में बहुत मददगार रहेगा।

4. सिर्फ जैन भोजनालय का ही भोजन करें।

5. प्लास्टिक का उपयोग पहाड़ पर बिल्कुल न करें।

6. पहाड़ पर बाइक पर न जाएं याद रखें कि पैदल वंदना ही सच्ची वंदना है।

7. कोल्ड-ड्रिंक, मैगी, पकोड़े जैसे अपवित्र व दूषित खाद्य पदार्थ पहाड़ पर ले जाना या खाना बंद करें।

यदि आप शिखरजी पर घूमने, पिकनिक मनाने जा रहे हैं या आप बिना सिगरेट-तंबाकू के नहीं रह सकते, तो कृपया शिखरजी न जाएँ, घर पर ही रहें।

यह याद रखें तीर्थ की रक्षा सिर्फ कमेटी की ज़िम्मेदारी नहीं है, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। यदि आप इन मर्यादाओं का पालन करते हैं, तो आपको कोटिश: अनुमोदना। आप इन मर्यादाओं का उल्लंघन होते देखें तो मौन न रहें, टोकें, रोकें और समझाएं।

# अहं के विसर्जन से महावीरत्व की ओर

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

जैन परंपरा के चिरंतन इतिहास में चौबीस तीर्थंकरों की उज्ज्वल परंपरा मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ के समान है। इस परंपरा के वर्तमान शासन नायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी संपूर्ण मानव समाज के लिए अहिंसा, करुणा, संयम और आत्मविजय के महान उद्घोषक हैं। उनका जन्मकल्याणक प्रत्येक वर्ष आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और आत्मोन्नति का अवसर लेकर आता है।

ईसा से 599 वर्ष पूर्व वैशाली गणराज्य के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला के यहाँ चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को जन्मे वर्धमान आगे चलकर महावीर बने। उनका जन्म राजवैभव के बीच हुआ, किंतु जीवन का लक्ष्य राजसुख नहीं, आत्मसुख था। तीस वर्षों तक राजमहल में रहते हुए भी वे भीतर से विरक्त रहे। अंततः उन्होंने सांसारिक ऐश्वर्य का परित्याग कर तप, त्याग और साधना का मार्ग चुना। बारह वर्षों के कठोर तप के पश्चात उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई और अगले तीस वर्षों तक उन्होंने पदविहार कर संत्रस्त मानवता को धर्म का अमृत पिलाया।

भगवान महावीर का धर्म किसी संप्रदाय तक सीमित नहीं है। उनका संदेश सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि धर्म का मूल्य इस बात से नहीं आँका जाना चाहिए कि वह तत्काल सुख देता है या परलोक का आश्वासन, बल्कि इस कसौटी पर परखा जाना चाहिए कि वह मनुष्य को समता, सत्य, ईमानदारी, पवित्रता, नैतिकता, अपरिग्रह, अनेकांत और अहिंसा की अनुभूति कराता है या नहीं।

महावीर बिना युद्ध किए महावीर बने। उन्होंने किसी राज्य को नहीं जीता, बल्कि स्वयं को जीता। इंद्रियों पर विजय, इच्छाओं पर नियंत्रण और अहंकार का विसर्जन—यही उनकी महावीरता थी।

जो अपने आप को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता है।

आज के हिंसा, प्रतिस्पर्धा और वर्चस्व से भरे युग में यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

महावीर जयंती मनाने का वास्तविक अर्थ केवल उत्सव या शोभायात्रा नहीं है। यह दिन आत्मसमीक्षा का दिन है। प्रश्न यह नहीं कि हम महावीर की जयंती मना रहे हैं, प्रश्न यह है कि क्या हम महावीर बनने की दिशा में कोई कदम बढ़ा रहे हैं? महावीर वही बन सकता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संतुलन रखे, जो सहनशील हो, जो प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व की भावना रखता हो और जो पुरुषार्थ के बल पर अपना भाग्य बदलने का साहस रखता हो।

आज का समाज स्वार्थ, छल, ईर्ष्या और दिखावे के संकट से घिरा है। मंच, माला और माइक की चकाचौंध में धर्म का वास्तविक स्वरूप कहीं धुँधला पड़ता जा रहा है। राजनीति, न्याय, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे पवित्र क्षेत्रों में नैतिक विचलन चिंता का विषय बन चुका है। ऐसे समय में भगवान महावीर का जीवन और उनकी शिक्षाएँ दीपस्तंभ के समान मार्गदर्शन करती हैं। वे हमें स्मरण कराती हैं कि बाहरी परिवर्तन से पहले आंतरिक परिवर्तन आवश्यक है।

महावीर बनने का सबसे सरल और सबसे कठिन सूत्र है—'मैं' का विसर्जन। अहंकार आत्मविकास का सबसे बड़ा शत्रु है। जहाँ 'मैं' प्रबल होता है, वहाँ प्रेम, करुणा और विनम्रता क्षीण हो जाती है। अहं के विसर्जन के बाद ही आत्मा का वास्तविक विकास संभव है। यही महावीर का संदेश है और यही आज के मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता भी।

महावीर कालजयी और असांप्रदायिक महापुरुष थे। उन्होंने जाति, वर्ग और संप्रदाय की सीमाओं से ऊपर उठकर चेतना की स्वतंत्रता का उद्घोष किया। संसार में रहते हुए भी निर्विकार रहना, कीचड़ में खिलते कमल की तरह निर्लिप्त रहना—यही महावीर होने का अर्थ है।

आज आवश्यकता है कि हम अपने भीतर के महावीर को जगाएँ, अपने आचरण को शुद्ध करें और अपने विचारों को उदात्त बनाएँ। मन, बुद्धि और कर्म—तीनों की पवित्रता से ही जीवन मूल्यवान बनता है। यही महावीरमय होने का मार्ग है और यही समाज व राष्ट्र के उत्थान की कुंजी भी।

विखंडित हो रहे समाज और विनाश की ओर बढ़ती दुनिया को यदि सही दिशा देनी है, तो भगवान महावीर की शिक्षाओं से बेहतर मार्गदर्शन कोई नहीं दे सकता। इसीलिए, धरती की अविरल जीवनधारा के साथ भगवान महावीर सदैव वंदनीय, अनुकरणीय और अभिवंद्य रहेंगे।

# ट्रेन का नामकरण "मूकमाटी एक्सप्रेस" एक प्रसंग

- राकेश जैन "चांदपुर"

यह अत्यन्त हर्ष और गौरव का विषय है कि भारत सरकार के रेल मन्त्रालय के अन्तर्गत रेलवे बोर्ड के संयुक्त निदेशक-कोचिंग राजेश कुमार, नई दिल्ली के द्वारा जारी पत्र संख्या 2026/CHG/36/01, दिनांक - 07/01/2026 तथा 08/01/2026 के द्वारा यात्री गाड़ी संख्या - "11701- रायपुर-जबलपुर एक्सप्रेस" एवं "11702- जबलपुर-रायपुर एक्सप्रेस" का नाम परिवर्तित करके **"MOOKMATI EXPRESS - मूकमाटी एक्सप्रेस"** करने का लोकव्यापी निर्णय लिया गया है।

राष्ट्रसन्त दिगम्बर जैन आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा आलेखित कालजयी हिन्दी महाकाव्य "मूकमाटी" की उपादेयता, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक पहचान को सम्मान प्रदान करने वाला यह एक अत्यन्त सराहनीय एवं दूरगामी कदम है। "मूकमाटी" महाकाव्य जैसे गौरवशाली नाम का रेल सेवा से जुड़ना न केवल जनभावनाओं को सुदृढ़ करता है बल्कि भारतीय रेल की जन-संवेदनशील सोच को भी दिग्दर्शित करता है।

राष्ट्रगौरव महान् आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के उच्च आदर्शों, दर्शन और करुणा का परिचायक "मूकमाटी" महाकाव्य भारतीय साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। इस ट्रेन का नामकरण 'मूकमाटी' के नाम पर करना जनप्रतिनिधियों सहित करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं का सम्मान है। यह भारतीय संस्कृति तथा जीवन मूल्यों के प्रति भारत सरकार /रेल मंत्रालय की संवेदनशीलता को भी दर्शाता है।

राष्ट्रहित चिन्तक, सन्तशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की परम्परा के विद्याकुल-शिरोमणि आचार्यप्रवर श्री समयसागर जी महाराज के सुमंगल आशीर्वाद से, उनके आज्ञानुवर्ती निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से "मूकमाटी एक्सप्रेस" नामकरण विषयक यह अभियान गतिशील हुआ था। इस महाभियान में इस ट्रेन का 'आचार्य विद्यासागर एक्सप्रेस' अथवा 'मूकमाटी एक्सप्रेस' नामकरण कराए जाने में गरिमामय योगदान करने वालों में पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाबचन्द कटारिया का एक नाम प्रमुख है। श्रीमती माया नारोलिया (म.प्र.) ने राज्यसभा के शीतकालीन सत्र के दौरान 9 दिसम्बर, 2025 को शून्यकाल के प्रसंग पर रेल मंत्रालय के द्वारा ट्रेन का उपर्युक्त नामकरण किए जाने का प्रस्ताव सदन के माध्यम से उठाया था। रायपुर-जबलपुर और जबलपुर-रायपुर एक्सप्रेस का परिचालन पश्चिम मध्य रेलवे (पमरे) जबलपुर (मध्यप्रदेश) से प्रारंभ होकर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे(दपूमरे), बिलासपुर के रायपुर (छत्तीसगढ़) तक होता है। इसमें जबलपुर, मदनमहल, नैनपुर, बालाघाट, गोंदिया, डोंगरगढ़, राजनांदगाँव, दुर्ग होकर रायपुर स्टेशनों तक ट्रेन का आना-जाना होता है। अतः इस ट्रेन का नामकरण 'मूकमाटी एक्सप्रेस' कराए जाने में इन क्षेत्रों के जनप्रतिनिधि रूप लोकसभा सदस्यों में आशीष दुबे (जबलपुर), डॉ. फग्गन सिंह कुलस्ते (मण्डला), श्रीमती भारती पारधी (बालाघाट), डॉ. प्रशान्त यादवराव पडोले (भण्डारा-गोंदिया, महाराष्ट्र), विजय बघेल (दुर्ग), बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर) ने महती भूमिका का निर्वाह किया है।

अनेक बार के निवेदन किए जाने पर एक दिन आचार्यश्री जी ने कहा कि नामकरण का अपनेआप में बड़ा महत्त्व होता है। गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने 'अहिंसा' की महत्ता का प्रतिपादन करने हेतु 'दयोदय' संज्ञक संस्कृत चम्पू काव्य सृजित किया है। साथ ही इस 'दयोदय तीर्थ' की भूमि पर यह वर्षायोग चल ही रहा है, अतः इससे श्रेष्ठ नाम और क्या हो सकता है?

उस समय वहाँ उपस्थित संघस्थ मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ने गुरुदेव की भावना को चरितार्थ करने प्रयास प्रारम्भ किया था। जी.एम. तथा डी. आर.एम. (पमरे), जबलपुर के माध्यम से अनेक सांसदों, विधायकों रूप जनप्रतिनिधियों तथा लगभग पाँच हजार नागरिकों के हस्ताक्षरित पत्र 'दयोदय एक्सप्रेस' नामकरण हेतु जनभावनाएँ रेल मंत्रालय / रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली तक पहुँचाई थीं। सतत प्रयास एवं सम्पर्क के प्रतिफल स्वरूप तत्कालीन रेलमंत्री ने 'दयोदय' शब्द नामकरण का प्रयोजन औचित्य जानना चाहा था। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि 'दया का ही उदय जिसमें हमेशा गर्भित रहता है, वह 'दयोदय' है।' इस लक्षण को जानकर उन्होंने तत्काल ही 'दयोदय एक्सप्रेस' नामकरण सम्बन्धी निर्देश 07 फरवरी, 2005 को जारी करवाए। इसके साथ ही जनभावना एवं जनप्रतिनिधियों की माँग को शिरोधार्य कर उक्त ट्रेन को जयपुर तक बढ़ाए जाने की स्वीकृति प्रदान करने की घोषणा की, जो 22 मई, 2006 से जयपुर तक बढ़ाई गई। वही यात्री गाड़ी संख्या 12181/12182 "दयोदय एक्सप्रेस - Dayodaya Express" के नाम से संचालित होकर गुरुदेव सन्तशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की 'मुनि दीक्षा' स्थली अजमेर (राजस्थान) तक अब बढ़ाई जाकर परिचालित हो रही है।

इस गौरवशाली एवं प्रेरणाप्रद कार्य को साकार करने में अनेक मुनिराजों, आर्यिका माताओं, एलक-क्षुल्लक जी महाराजों, त्यागी-व्रतीजनों, श्रावक-श्राविकाओं के साथ ही सामाजिक संस्थाओं, संगठनों, पाठशालाओं, स्कूलों, व्यक्तियों, पत्रकारों, इलेक्ट्रॉनिक-प्रिन्ट तथा सोशल मीडिया का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः इन सभी के प्रति हम अन्तः करण के विनम्र भावों से आभार प्रकट करते हुए साधुवाद प्रेषित करते हैं। इस ऐतिहासिक एवं गरिमामय कार्य हेतु हम प्रणति निवेदित करते हुए सभी का पुनः बहुत-बहुत हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

# चार जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि काशी में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

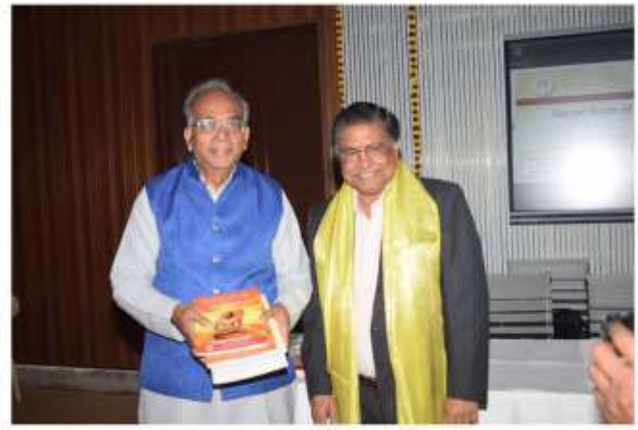

४ जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि काशी में पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज की प्रेरणा से जैन धर्म के मूर्धन्य विद्वान और अनेक जैन संस्थानों के संस्थापक और षट्खंडागम, कसायपाहुड तथा महाबंध जैसे ताड़पत्रों पर लिखित ग्रंथों को हिन्दी में जनसाधारण के लिए उपलब्ध कराने वाले सिद्धांताचार्य पंडित फूलचंद शास्त्री द्वारा काशी में स्थापित संस्था श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, वाराणसी, गुरूदेव समंतभद्र सेन्टर फॉर जैनिज्म–कारंजा गुरूकुल और धर्म फॉर लाईफ–नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में पंडितजी की १२५ वीं जयंती के अवसर पर १ और २ फरवरी को जैन धर्म की पावन जड़े पर छह सत्रों में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। जिसमें देश विदेश के ५० से अधिक विद्वानों के द्वारा जैन इतिहास, जैन पुरातत्व, प्राचीन जैन पांडुलिपियां, जैन गणित, जैन दर्शन, प्राकृत साहित्य, जैन विज्ञान इत्यादि की वर्तमान में प्रासंगिकता पर चर्चा की गई। साथ ही पैनल चर्चा में विभिन्न भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता की अवधारणा पर भी चर्चा हुई।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस पर पंडित सिद्धांताचार्य फूलचंद शास्त्री के भित्ति चित्र का अनावरण संस्थान के निदेशक प्रो० अशोक कुमार जैन–रूड़की, न्यायमूर्ति एन.के.जैन जयपुर, न्यायमूर्ति विमला जैन–भोपाल, तिब्बती विश्वविद्यालय के कुलपति के नामित विद्वान डा. वांगचुक डोरजी नेगी और आईएएस श्री सुरेश जैन भोपाल, डा. विजय कुमार चौधरी–भोपाल के कर कमलों के द्वारा वयोवृद्ध जैन विद्वान प्रो० कमलेश कुमार जैन–वाराणसी ने संपन्न कराई। तत्पश्चात् संस्थान के दिवगंत अध्यक्ष पद्मश्री प्रो० राजाराम जी जैन के निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान की गई। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के श्री केशव देव जैन–कानपुर द्वारा की गई। स्वागत वक्तव्य बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उप पुस्तकालय अधिकारी और कार्यक्रम सचिव डा. संजीव सराफ ने दिया। इस अवसर पर अतिथियों ने जैन धर्म को जन धर्म बताते हुए उसकी प्रमुख शिक्षाओं की वर्तमान समय में प्रांसगिकता पर विचार रखे। समाज के उपाध्यक्ष श्री राकेश जैन की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। उद्घाटन सत्र में जैन मिलन वाराणसी के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जैन की पुस्तक, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद की प्रांतीय अध्यक्ष सागर की डा. आशा जैन की पुस्तक और एक अन्य पुस्तक समयसार का विमोचन भी अतिथियों के कर कमलों के द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. अनुपम जैन ने संस्थान के पुस्तकालय को जैन गणित पुस्तक और अर्हत् वचन का नवीनतम अंक सहित अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रो. सुजाता गौतम ने जैन धर्म पर अपनी पुस्तक भी भेंट की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता इंदौर के प्रो. अनुपम जैन ने की। इस सत्र में कारंजा गुरूकुल पर श्री कीर्ति भौंरे और पंडित द्वारा सर्वार्थसिद्धि ग्रंथ के अनुवाद पर रूस की डा. नतालिया झेलीजनोवा, जैन तत्व मीमांसा पर करेली के डा. अनुभव जैन, और श्री विजय भाई शाह ने अपना व्याख्यान दिया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. फूलचंद 'प्रेमी' ने की। इस सत्र में पंडित सिद्धांताचार्य फूलचंद शास्त्री के साहित्यिक, सामाजिक, और राजनीतिज्ञ अवदान पर प्रो. कमलेश कुमार जैन, प्रो. अशोक कुमार जैन, प्रो. अनेकांत जैन, श्रीमति प्रीति बोरे, बीएल जैन संस्थान नई दिल्ली के निदेशक प्रो. विजयकुमार जैन ने अपने व्याख्यान देते हुए पंडित जी को एक संस्था बताया।तृतीय सत्र की अध्यक्षता पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रो. एस.पी.पांडे ने की । इस सत्र में दिल्ली के प्राचार्य डा. निर्मल कुमार जैन, बीएचयू की डा. गीता भट्ट और डा. योगेश भट्ट, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय की श्रीमती सुनयना जैन, डीएवी कॉलेज वाराणसी की स्वाति सुचारिता नंदा, काशी विद्यापीठ की मीनू तिवारी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ की श्शोध अध्येता डा. अनीता यादव, भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान शिमला के डा. शिवेन्द्र मिश्रा ने जैन दर्शन के विभिन्न आयामों पर अपने श्शोध पत्र प्रस्तुत करे।

चतुर्थ सत्र में सिद्धांताचार्य पंडित फूलचंद श्शास्त्री व्याख्यानमाला के अंतर्गत जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य प्रो. राजकुमार छावडा ने तत्वार्थसूत्र की समस्या और सर्वाथसिद्धि की प्रस्तावना को मान्यता देने के प्रश्न पर अपना व्याख्यान दिया। इसी क्रम में प्रमुख जैन गणितज्ञ और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर की भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य अन्वेषक

डा. अनुपम जैन ने जैन धर्म के वैज्ञानिक पहलू और जयपुर के डा. अनिल कुमार जैन ने जैनों की घटती जनसंख्या पर अपने विचार साझा करे।

पंचम सत्र की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर मारूति नंदन तिवारी ने की। इस सत्र में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. एस.एस.सिन्हा ने भारतीय कला संस्कृति में पार्श्वनाथ, श्री अम्लप्रभ चंवरे द्वारा कहानी दो अंतरिक्ष प्रतिमाओं की श्रीमति प्रज्ञा दोनगांवकर द्वारा कारंजा का पंच कल्याणक पट्ट और भारत कला भवन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक प्रो. डी.पी.शर्मा द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता में जैन चिन्हों की जड़े पर अपने व्याख्यान दिए गए।

पैनल चर्चा प्रमुख बौद्ध विद्वान और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पालि एवं बौद्ध अध्ययन के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. लालजी श्रावक की अध्यक्षता में हुई। जिसमें भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता की अवधारणा पर जमकर चर्चा हुई। इस चर्चा में धर्म फॉर लाईफ की अध्यक्षा डा. मेधावी जैन दिल्ली, श्रीमति प्रज्ञा भट्ट बैंगलोर, कीर्ति कुमार बोरे और डा. आनंद जैन ने गंभीर चर्चा की तथा प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। पैनल चर्चा ने सभी को प्रभावित किया।

समापन सत्र में पार्श्वनाथ विद्यापीठ के निदेशक प्रो. विजय शंकर शुक्ला ने अध्यक्षता की एवं जैन और बौद्ध दर्शन विभाग प्रमुख प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह मुख्य अतिथि रहे। सभी सत्रों का कुशल संचालन डा. मेधावी जैन और डा. संजीव सराफ ने किया एवं आभार कार्यक्रम के सह संयोजक अमित जैन ने किया।

**डॉ. संजीव सराफ**

# अंतर्राष्ट्रीय जैन महाकुंभ :27आचार्य महाश्रमण महाराष्ट्र में नासिक मांगीतुंगी के मध्य णमोकार महातीर्थ पर ऐतिहासिक समागम

महाराष्ट्र में जैन महाकुंभ भव्य अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव जनमंगलकारी महातीर्थ णमोकार तीर्थ-जहाँ युगों की अखंड साधना, अनंत आस्था,और संस्कारों का दिव्य संगम और त्याग की भूमि,जहाँ प्रत्येक शिला जिनवाणी का संदेश देती है,जहाँ हर दिशा में संतों के आशीर्वाद की सुगंध बिखरती है, जहाँ हर शिला में श्रद्धा बसती है,जहाँ हर मार्ग धर्म की ओर ले जाता है,यह दिव्य पावन धरा पर पाषाण को पूज्य बनाने का अनुष्ठान जैनेश्वरी तपश्चर्या के महानायक, प.पू साधना सम्राट गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज के सान्निध्य में,गुरुदेव परम पूज्य ज्ञानयोगी, प्रज्ञाश्रमण, सर्वोदयी राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य श्री 108 देवनंदी जी महाराज णमोकार तीर्थ प्रणेता का निर्देशन, मुनिश्री अमोघकीर्ति जी एवं मुनिश्री अमरकीर्ति जी के मार्गदर्शन में वहींआचार्य परमेष्टिअभीक्ष्ण

ज्ञानोपयोगी चारों दिशाओं से तीन सौ से अधिक महाश्रमण, परमपूज्य पुष्पगिरी प्रणेता आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज ससंघ,आचार्य श्री पद्मनंदी जी, नवग्रह तीर्थ प्रणेता आचार्य श्री गुणधरनंदी जी, धर्मतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी, आचार्य श्री सिद्धांतसागर जी, आचार्य श्री विनम्रसागर जी, आचार्य श्री प्रसन्नऋषि जी महाराज,आचार्य श्री डॉ. प्रणाम सागर जी,आचार्यश्री सुविधिसागरजी, आचार्य श्री कुमुदनंदी जी, आचार्य श्री विद्यानंदी जी,आचार्य श्री तीर्थनंदी जी, आचार्य श्री गुलाबभूषण जी, संसघआचार्य श्री श्रुतधरनंदीजी,आचार्य श्री गुणभद्रनंदी जी,आचार्य श्री सूर्यसागर जी, आचार्य श्री सुयशगुप्ती जी, आचार्य श्री दयाऋषी जी, उपाध्याय श्री विरंजनसागर जी, उपाध्याय श्री विभंजनसागर जी, क्षुल्लक श्रीसमर्पण सागर जी, क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी, क्षु.योगभूषण जी,आर्यिका श्री सौभाग्यमती माता जी, आर्यिका श्री सृष्टिभूषण माता जी ससंघ, 27 आचार्य संघों का समागम, श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी श्रवणबेलगोला कर्नाटक, श्री भट्टारक जिनसेन जी -नांदनी महा.श्री भट्टारक चारूकीर्ति जी-मूडबद्र कर्नाटक सहित वृहद पावन सान्निध्य एक साथ एक मंच पर मुनिराजों के दर्शन करने का सौभाग्य और बा.ब्र. वैशाली दीदी द्वारा वृहद संयोजन, प्रतिष्ठा महोत्सव संयोजक श्री नीलम जी अजमेरा, श्री संतोष पैंढारी नागपुर की अध्यक्षता जहां तीर्थंकर भगवान के जन्म, दीक्षा, तप केवलज्ञान, निर्वाण जैसे जीवन-कल्याणकारी प्रसंग विधिपूर्वक सम्पन्न होंगे, भक्तों के प्रत्येक क्षण जिनशासन के प्रति समर्पण से साकार हो रहा है।

**प्रेषक: पवनघुवारा भूमिपुत्र**

# गुरुदेव भगवान बनकर आये थे तीर्थंकर बनने चले गए – आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

## आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के द्वितीय समाधी दिवस

सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र जैन तीर्थ कुण्डलपुर में विश्व वंदनीय,जन जन के संत महान तपस्वी आचार्य श्री विद्यासागर जी के द्वितीय समाधि दिवस पर आचार्य श्री समयसागर जी के मंगल आशीर्वाद एवं आचार्य श्री विशद सागर जी, मुनिराजों माताजी ससंघ सान्निध्य में प्रातः काल भक्तामर महामंडल विधान, आचार्य छत्तीसी विधान (पुन्यार्जक भामाशाह परिवार श्राविका श्रेष्ठी श्रीमती सुशीला पाटनी किशनगढ़) अभिषेक, शांतिधारा, ऋद्धि कलश संपन्न हुआ। सांयकाल भक्तामर दीप अर्चना, पूज्य बड़े बाबा की महाआरती हुई। संयम स्वर्ण कीर्ति स्तंभ पर एक दीप गुरु समीप दीप प्रज्वलित कर आचार्य श्री की महा आरती कर गुरु चरणों में नमन किया।

प्रचारमंत्री जयकुमार जैन 'जलज' ने बताया कि दोपहर में स्थानीय विद्याभवन में विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज ने विनयांजलि व्यक्त करते वह कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी ने संपूर्ण बुंदेलखंड पूरे भारत देश में जैन धर्म की जो अलख जगाई है उनके द्वारा अनेक तीर्थ का निर्माण हुआ, अनेक संतों अनेक आगम शास्त्रों का उद्भव हुआ। जिनधर्म को आगे बढ़ाने की उन्होंने कोशिश की उनकी प्रेरणा रही ।जब तक उनका जीवन रहा तब तक उन्होंने जन-जन के कल्याण के लिए बहुत अच्छे कार्य किये ।कितने दूर दृष्टि रहे गुरुदेव उन्होंने साधकों के साथ-साथ लोगों को धर्म मार्ग में लगाया ।ऐसे महान संत जिनकी छवि क्या नेता क्या अभिनेता ,जैन, अजैन सभी के दिलों में बसी हुई है। ऐसे आचार्य श्री विद्यासागर जी जो डोंगरगढ़ क्षेत्र पर समाधिस्थ हुए। सभी उनका समाधि दिवस अत्यंत भक्ति भाव से मनाते हैं ।संतों का दीक्षा दिवस समाधि दिवस अवश्य मानना चाहिए और यही भावना रहे हमारा अंतिम मरण समाधि मरण पूर्वक हो। यही भावना बड़े बाबा के चरणों में बैठकर भातें हैं। आचार्य विद्यासागर आचार्यों में चमकने वाले सूर्य थे। आचार्य श्री आगे आगे चलते गए और कारवां बढ़ता गया। साधना बढ़ाते चले गए और साधना के पुण्य प्रताप से सभी कार्य होते चले गए। वे जंगल ,तीर्थक्षेत्र एकांत में साधना करते थे। हमारे आराध्य हमारे बीच से चले गए लेकिन हम सभी हृदय में बसाए हैं सभी के अंतस में रहेंगे हमें उनके आदर्शों को प्राप्त करना है आप सभी ने जो भी सुना ग्रहण किया उसे जीवन में उतारना है।

# बढ़ते मंदिर, सिमटता समाज : आत्ममंथन का समय

अरविंद जैन "बीमा", उज्जैन

आज जैन समाज एक गंभीर और चिंताजनक दौर से गुजर रहा है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से देखें तो जैन समाज देश के सबसे छोटे अल्पसंख्यक समुदायों में से एक बन चुका है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पारसी समाज (0.006%) के बाद जैन समाज की जनसंख्या मात्र लगभग 0.4% रह गई है। यह स्थिति तब और अधिक पीड़ादायक हो जाती है जब हम यह देखते हैं कि जैन समाज देश में सबसे अधिक राजस्व, कर, समाजसेवा, गौशाला संचालन और परोपकारी संस्थाओं का संचालन करने वाला समाज है।

शहरी क्षेत्रों में आज भी जैन मंदिरों की संख्या प्रचुर मात्रा में है, किंतु विडंबना यह है कि जैन समाज स्वयं शहरों के पुराने क्षेत्रों को छोड़कर दूरस्थ कॉलोनियों में बसता जा रहा है। परिणामस्वरूप अनेक प्राचीन एवं ऐतिहासिक जैन मंदिर वीरान होते जा रहे हैं। दर्शनार्थियों का अभाव बढ़ रहा है और उनकी देखरेख एवं सुरक्षा भी एक गंभीर प्रश्न बनती जा रही है।

चिंता का विषय यह भी है कि समाज की घटती जनसंख्या के बावजूद विभिन्न स्थानों पर विशाल और भव्य नए मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा निरंतर दी जा रही है। इन मंदिरों में सोना-चांदी एवं बहुमूल्य सामग्री का अत्यधिक उपयोग किया जाता है, जबकि भविष्य में इन मंदिरों में श्रद्धालुओं की संख्या और सुरक्षा व्यवस्था दोनों ही अनिश्चित दिखाई देती हैं। इतिहास साक्षी है कि एक समय मंदिरों की संपत्ति लूटी गई थी—क्या भविष्य में ऐसी परिस्थितियां दोबारा नहीं बन सकतीं? इस पर गंभीर चिंतन आवश्यक है।

आज की युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा, करियर और विदेशों में बसने की आकांक्षा के कारण मंदिरों एवं धार्मिक गतिविधियों से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है। इसके साथ ही कम उम्र में वैराग्य की ओर प्रेरणा, देर से विवाह, एक या शून्य संतान की प्रवृत्ति तथा लड़कियों का अंतर्जातीय प्रेम विवाह भी जैन समाज की जनसंख्या को और संकुचित कर रहे हैं।

समय की मांग है कि नए मंदिरों के निर्माण से पहले प्राचीन मंदिरों के संरक्षण, सुरक्षा एवं पुनर्जीवन पर ध्यान दिया जाए। गत वर्ष मुंबई में एक जैन मंदिर तोड़ने की घटना हो चुकी है। इसी प्रकार दिल्ली में पर्यूषण पर्व के दौरान एक मांसाहारी अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा पूजा कार्य में विघ्न उत्पन्न किया गया था।

यदि आवश्यकता हो तो उपेक्षित मंदिरों की प्रतिमाओं को सक्रिय मंदिरों में विधिपूर्वक विराजमान किया जाए। भगवान को सोना-चांदी से मढ़े भव्य मंदिरों की नहीं, बल्कि सच्ची श्रद्धा, भक्ति और सदाचार की आवश्यकता होती है—यही जैन दर्शन का मूल संदेश है।

इसके साथ ही जैन समाज का दिगंबर, श्वेतांबर एवं अन्य पंथों में बिखराव भी भविष्य के लिए चिंताजनक है। संतों के आवागमन, जलसों एवं विधानों में होने वाला अत्यधिक खर्च भी आत्मचिंतन की मांग करता है। सभी पंथों में एकता, समन्वय और सहयोग आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

किसी भी समाज की मांगों की सुनवाई तभी होती है जब उसके पीछे जनसंख्या और संगठित नेतृत्व का दबाव हो। दुर्भाग्यवश आज राजनीति में जैन समाज का प्रतिनिधित्व लगभग समाप्त प्रायः हो गया है। समाज के जिस भी व्यक्ति में नेतृत्व क्षमता हो, उसे सभी पंथों द्वारा एकमत होकर आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

आवश्यक है कि बच्चों में बचपन से देव-दर्शन, संस्कार और धार्मिक जुड़ाव विकसित किया जाए। साथ ही युवा दंपतियों को अधिक संतानों के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षा, चिकित्सा और आर्थिक सहयोग की योजनाएं समाज स्तर पर बनाई जाएं। मिशनरी संस्थाओं की भांति जैन समाज को भी जैन विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों की स्थापना पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिससे संख्या के साथ संस्कार भी सुरक्षित रहें।

साधु-संतों से विनम्र निवेदन है कि वे युवा पीढ़ी को कम आयु में वैराग्य की ओर प्रेरित करने के बजाय उन्हें पहले पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन का अवसर प्रदान करें। प्रौढ़ अवस्था में वैराग्य का मार्ग अधिक संतुलित और समाजोपयोगी सिद्ध हो सकता है।

हमारे पूर्वजों के समय 8–9 भाई-बहन सामान्य बात थी, किंतु आज एकल संतान या निःसंतान जीवन को प्राथमिकता दी जा रही है। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में जैन समाज के विलुप्त होने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। तब हमारे मंदिर, धर्मशालाएं और संस्थाएं दूसरों के अधीन चली जाएंगी—यह विचार ही अत्यंत पीड़ादायक है।

यह लेख किसी पर आरोप नहीं, बल्कि समाज के प्रति पीड़ा, चिंता और आत्ममंथन की पुकार है। समय रहते यदि हमने दिशा नहीं बदली, तो भविष्य हमें क्षमा नहीं करेगा।

सभी साधु-संतों एवं समाज के प्रबुद्धजनों के चरणों में सादर वंदन करते हुए यही प्रार्थना है कि वे जैन समाज को संरक्षण, संतुलन और संवर्धन का सही मार्ग दिखाएं।

# एक दिन की रूई की कमाई से निर्मित अतिशय तीर्थ में 244 वर्ष बाद रचा जाएगा इतिहास
## पटेरिया जी में दिव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव 16से 21मार्च 2026तक

- राजेन्द्र जैन महावीर

गढ़ाकोटा (सागर)। त्याग, तपस्या, श्रद्धा और अतिशय चमत्कारों की पुण्यभूमि गढ़ाकोटा एक बार फिर धर्म इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ में अपना नाम अंकित करने जा रही है। 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी के अतिशय से आच्छादित, विश्वविख्यात अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी में 244 वर्षों के दीर्घ अंतराल के पश्चात भव्य एवं दिव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन 16 मार्च से 21 मार्च 2026 तक होने जा रहा है।

यह ऐतिहासिक आयोजन चर्या शिरोमणि पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य व सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य ब्र.जय निशांत टीकमगढ़ ,पंडित सनत कुमार विनोद कुमार जैन रंजवास द्वारा सम्पन्न होगा। अनेक लौकिक अतिशयों से युक्त, त्यागी मुनियों की तपोभूमि रही गढ़ाकोटा नगरी को यह महासंयोग पच्चीस दशकों बाद प्राप्त हो रहा है, जिससे सम्पूर्ण जैन समाज में अपूर्व हर्ष, उल्लास और धर्ममय वातावरण व्याप्त है।

### पात्र चयन कार्यक्रम सम्पन्न, गढ़ाकोटा को मिला विशेष गौरव

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री सोम्य सागर जी महाराज एवं मुनि श्री जयेंद्र सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में 4 जनवरी 2026 को पंचकल्याणक हेतु पात्र चयन कार्यक्रम अत्यंत श्रद्धा और भावनात्मक वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर गढ़ाकोटा के श्री सुनील सेठ को सौधर्म इन्द्र एवं श्रीमती रजनी सेठ को शची इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भगवान के माता–पिता के रूप में डॉ. सुरेश सिंघई एवं श्रीमती सुषमा सिंघई, कुबेर इन्द्र के रूप में श्री सुशील सेठ एवं श्रीमती मंजू सेठ, महायज्ञनायक के रूप में श्री आशीष चौधरी सहित अनेक पात्रों का चयन बोलियों के माध्यम से हुआ। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि सभी प्रमुख पात्र गढ़ाकोटा नगर से ही चयनित हुए हैं, जो नगर के धार्मिक सौभाग्य और एकजुटता को दर्शाता है। ध्वजारोहण कर्ता के रूप में श्री सुरेन्द्र कुमार बहरोल वाले रहेंगे।

### एक दिन की रूई की कमाई से बना चमत्कारी मंदिर

अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी केवल अपने चमत्कारों के लिए ही नहीं, बल्कि अपने अद्भुत निर्माण इतिहास के लिए भी सम्पूर्ण जैन समाज में प्रसिद्ध है। लगभग 240 वर्ष पूर्व, इस पावन पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण मोहनदास राम किशुन शाह ने रूई के व्यापार में मात्र एक दिन के मुनाफे से कराया था। यह घटना स्वयं में त्याग, श्रद्धा और समर्पण का अनुपम उदाहरण है।

भगवान पार्श्वनाथ जी की तीन पद्मासन प्रतिमाएँ समय–समय पर अपने चमत्कारी अतिशयों से श्रद्धालुओं की आस्था को दृढ़ करती रही हैं। क्षेत्र कमेटी के सेठ आदेश के अनुसार, गढ़ाकोटा नगर का यह परम सौभाग्य है कि उसकी धरती पर ऐसा चमत्कारी अतिशय क्षेत्र विराजमान है।

### मुनि संघ के प्रवास से तीर्थ को मिला नवजीवन

मुनि श्री क्षमासागर जी एवं मुनि श्री गुप्तिसागर जी महाराज के

चातुर्मास उपरांत यह तीर्थ तीव्र विकास की ओर अग्रसर हुआ है। गढ़ाकोटा से मात्र 2 किलोमीटर दूर स्थित यह क्षेत्र रहली–पटना गंज एवं कुण्डलपुर के मध्य स्थित होने से देशभर के श्रद्धालुओं के लिए सहज पहुँच में है।

क्षेत्र पर सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला, भोजनशाला एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएँ उपलब्ध हैं, जिससे दूर–दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को पूर्ण सुविधा प्राप्त हो सके।

**पंचकल्याणक हेतु पूर्णतः तैयार पटेरिया जी**

क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष विमल चौधरी एवं महामंत्री महेन्द्र सेठ कोषाध्यक्ष आदेश सेठ ने बताया कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव को लेकर सम्पूर्ण क्षेत्र में उत्सव जैसा वातावरण है। हर घर में उत्साह, हर मन में धर्मभाव और हर तन–मन से सेवा का संकल्प दिखाई दे रहा है।

मुनि संघ के दीर्घ प्रवास से समाज में अद्भुत एकजुटता देखने को मिल रही है। शासन–प्रशासन के पूर्ण सहयोग के साथ–साथ स्थानीय विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री गोपाल भार्गव का मार्गदर्शन भी प्राप्त हो रहा है। क्षेत्र कमेटी व पंचकल्याणक कमेटी अध्यक्ष सुनील सेठ महामंत्री सुशील सेठ कोषाध्यक्ष रजनीश सिंघई,संयोजक आशीष चौधरी ने सम्पूर्ण देश के श्रद्धालुओं से भावपूर्ण अपील की है कि वे इस दुर्लभ एवं ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें और इस पुण्य अवसर के साक्षी बनें।

# पाकिस्तान में 900 वर्ष पुराना जैन मंदिर, एक विलुप्त हो चुकी सुनहरी सभ्यता का अंतिम साक्षी

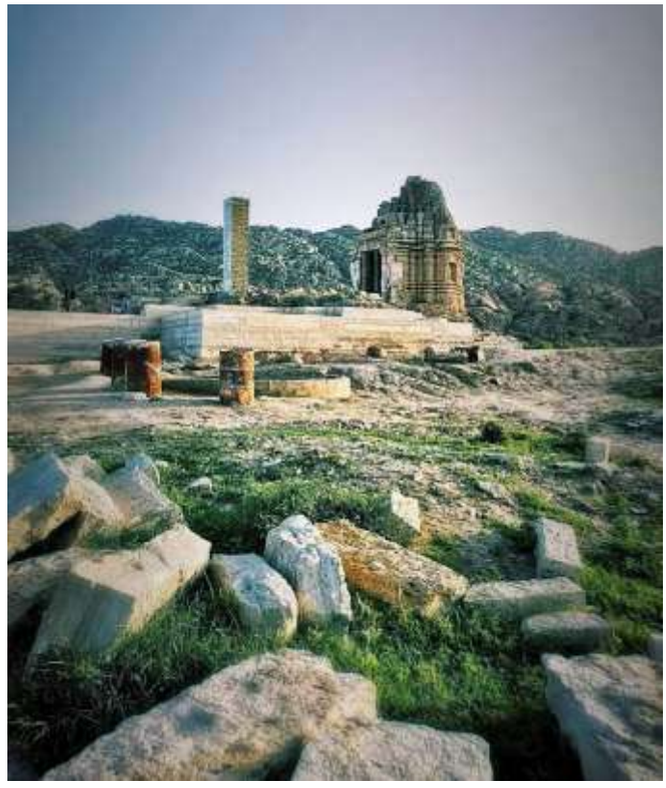

जब हम पाकिस्तान को आज के नजरिए से देखते हैं, तो शायद ही अंदाज़ा लगा पाएं कि यह भूमि कभी जैन धर्म का महाबलशाली केंद्र थी। सिंध, थारपारकर, बलूचिस्तान और पंजाब के क्षेत्रों में हज़ारों जैन मंदिर धर्मशालाएँ और जैन नगर बसे थे।

## नागरपारकर

यह इलाका राजस्थान, गुजरात, कच्छ और सिंध को जोड़ने वाला प्रमुख व्यापार मार्ग था। इसीलिए यहाँ एक समय में बड़ी संख्या में जैन व्यापारी, साधु, शास्त्री और कारीगर निवास करते थे।

## पूणी जैन मंदिर 13वीं सदी का स्थापत्य रत्न

जिला थारपारकर, पाकिस्तान, लगभग 900 वर्ष पुराना यह मंदिर उस गौरवशाली युग की निशानी है, जब यहाँ बड़ी संख्या में जैन बस्तियाँ थीं।

## इस मंदिर की अनोखी विशेषताएँ

महीन, सूक्ष्म और अत्यंत प्राचीन जैन मूर्तिकला,

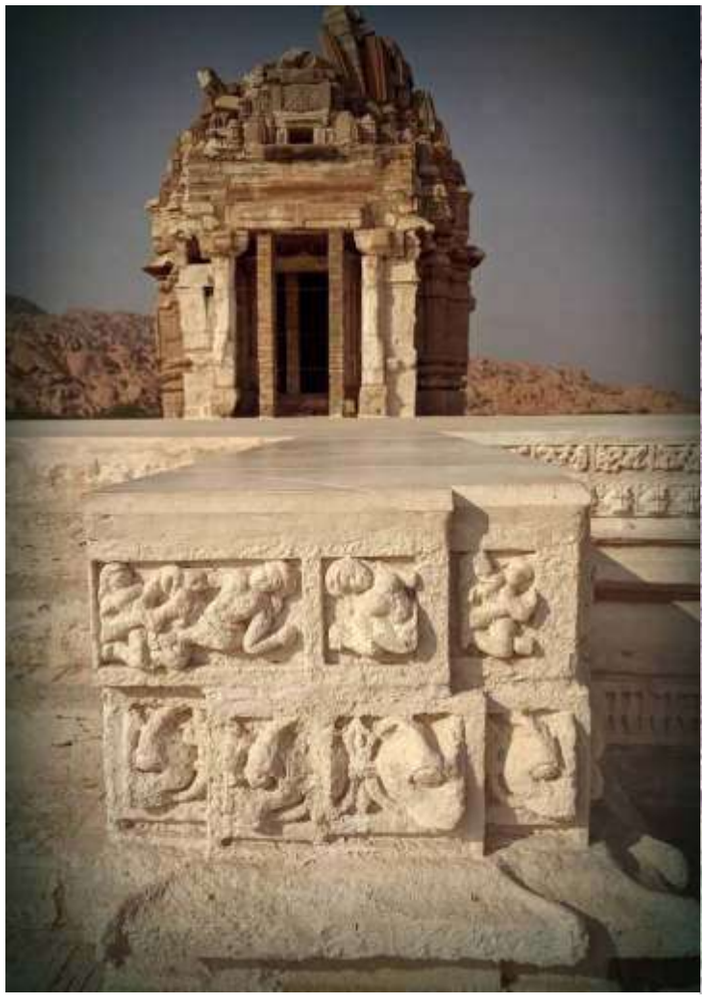

हाथी पर विराजमान तीर्थंकर की दुर्लभ नक्काशी जो किसी जैन कारीगर की उच्च कोटि की कला का प्रमाण है। यूरोपीय प्रभाव वाले चित्र और वास्तु, जिनका उल्लेख ASI बोर्ड पर मिलता है। रेगिस्तान में पत्थर से बना अद्वितीय मंदिर जो आज भी लगभग मूल रूप में खड़ा है।

पूरा नगरपारकर क्षेत्र UNESCO Tentative List में शामिल।

समृद्ध व्यापार, धर्म और संस्कृतियों के संगम का प्रतीक

इतिहासकारों के अनुसार पाकिस्तान में जैन धर्म

सिंध क्षेत्र में ही 2,000 से अधिक जैन मंदिर बिखरे हुए

कराची से लेकर थट्टा, उमरकोट, मीरपुरखास, नागरपारकर, कहीं न कहीं जैन अवशेष मिलते हैं।

कई स्थानों पर आज भी खुदाई में जैन मूर्तियाँ, तीर्थंकर प्रतिमा-बाँस की नक्काशी, मनौती स्तूप निकलते हैं। नागरपारकर को "जैन सभ्यता का दक्षिणी द्वार" कहा जाता था।

फोटो में दिख रही प्रतिमाएँ और नक्काशी इसी भव्य सांस्कृतिक विस्तार का प्रमाण हैं।

### थार के रेगिस्तान में धर्म और व्यापार का संगम

नागरपारकर जैन यात्रियों के लिए सिर्फ मंदिर नहीं था—

यह एक आर्थिक केंद्र, संस्कृति का बिंदु, और अध्यात्म का पवित्र स्थल था। यहाँ से गुजरने वाले कारवां कई देशों, कई संस्कृतियों और कई भाषाओं को जोड़ते थे।

### विरासत को बचाने की आवश्यकता

समय, मौसम और उपेक्षा ने इस धरोहर को काफ़ी नुकसान पहुँचाया है। जिस जैन धर्म ने इस धरती पर शांति, अहिंसा और कला की अमिट छाप छोड़ी है।

वीडियो (नगरपारकर जैन मंदिर यात्रा)

**फ़ोटो आभार : गूगल, टूरिज्म विभाग, पाक**

**संकलन : सुलभ जैन (बाह)**

# संभाजी नगर देश का पहला नगर, जहां हर मंदिर में रखी जाएगी तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक

## तीर्थ हमारी शान है, हमारे प्राण हैं, आज उनके लिये जरूरी है दान - आचार्य श्री गुणधरनंदी

छत्रपति संभाजी नगर में सप्त दिवसीय योग साधना अमृत महामहोत्सव में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा तीर्थक्षेत्र संरक्षण,संवर्धन,जीर्णोद्धार हेतु संतों के परम सान्निध्य में 11 जनवरी 2026 को सम्मेलन का आयोजन किया गया,जिसमें गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी,राष्ट्रसंत आचार्य श्री गुणधर नंदी,क्रांतिकारी राष्ट्रसंत श्री गुप्तिनंदी जी,आचार्य श्री प्रणाम सागरजी,उपाध्याय श्री विरंजन सागरजी,गणिनी आर्यिका श्री सौभाग्यमति माताजी आदि को गरिमामय उपस्थिति रही।

गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी ने कहा तीर्थक्षेत्र,सिद्धक्षेत्र,अतिशय क्षेत्रों की सुरक्षा कौन करे\ कैसे करे\ नेता कौन हो, संचालक कौन\ तीर्थों की सुरक्षा की बातें सुनते जीवन बीत गया,पर हल आज तक नहीं निकला। देखते-देखते बहुत से क्षेत्र हाथ से निकल गये। अधिकांश सिद्धक्षेत्रों पर हमारा अधिकार ही नहीं है। किसी का अधिकार हो जाये,तो वापस मिलना मुश्किल हो जाता है। आज दिगंबर जैन समाज,साधुओं में,पंथों में बंट गया। जहां फूट रहती है,वहां नुकसान ही होता है,स्टेजों से बहुत उपदेश हो गये। आज न साधु,न समाज इस पर गंभीर है। यदि एक-एक साधु एक-एक क्षेत्र ले लें,तो तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग मांगने की जरूरत न पड़े। आज परिवार कोर्ट -कचहरी -बीमारियों पर लाखों खर्च कर रहे हैं,थोड़ा भाव बनाइये,तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत बनायें। भावना सब रखते हैं,पर सहयोग नहीं करते।

आचार्य श्री गुणधरनंदी जी ने कहा कि हम जैन हैं,तो उसका कोई सर्टिफिकेट है,तो ये सिद्धक्षेत्र हैं,उनके बिना हमारी पहचान खत्म हो जायेगी। हमारी पहचान हैं तीर्थक्षेत्र,उनकी सुरक्षा में प्राण न्यौछावर भी करें,तो कम है। जिन्होंने तीर्थों पर कुदृष्टि डाली,वे बच नहीं पाये। तीर्थ हमारी शान है,हमारे प्राण हैं। जैन समाज ने जब भी किसी अन्य समाज पर संकट आया,तो उनकी सहायता की। आज तुमसे जान नहीं,तुम्हारा दान मांग रहा हूं। अगर करोड़ों का काम करना चाहते हो,तो तिजोरी के साथ,एक तीर्थों की गुल्लक भी लगायें। कल भाजपा महासचिव बी एल संतोष ने बताया कि सबसे ज्यादा टैक्स जैन देते हैं,तो तीर्थों के लिए दान क्यों नहीं,उसमें भी रियायत मिलती है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि तीर्थों का जीर्णोद्धार होना चाहिए,बदलाव नहीं,प्राचीन संस्कृति का विनाश न हो। आज वास्तु के नाम पर आलतू-फालतू बदलाव हो रहे, हजार साल पुरानी मूर्तियां,मंदिर तोड़ रहे,वो साधु नहीं, आतंकवादी हैं। जो संस्कृति का विनाश करते हैं,औरंगजेब हैं,वो जैनों के विनाश के लिए कलकी पैदा हुआ है। पहले श्रीफल देकर प्रार्थना करें,न माने तो कानूनन ट्रीटमेंट करें,संविधान कहता है,1947 से पुरानी संस्कृति,मूर्तियों से छेड़छाड़ न हो।

आचार्यश्री गुप्तिनंदी जी ने कहा कि अपने हाथों से दान निकालना शुरू हो जाये वो जीवंत यज्ञ है,तीर्थों की रक्षा,संस्कृति का परिचायक है। धरा से निकलती मूर्तियां,हमारी प्राचीनता को दर्शाती हैं। हमारे तीर्थों का संवर्धन,संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है। आज आपको दक्षिणा देने का वक्त है,पुराने प्राचीन तीर्थों की सुरक्षा हो। रोजाना 1,11,21 रुपये तीर्थों के लिये दान करो। तीर्थों की रक्षा आपने की,तो तीर्थ भी आपकी रक्षा करेंगे,यह जीवंत रूप में सेलिब्रेशन होगा। उन्होंने सभी को संकल्प दिलाया कि रोज तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिये दान निकालेंगे।

आचार्य श्री प्रणाम सागरजी ने कहा कि तीर्थों का जीर्णोद्धार है\ तभी समय का उद्धार है। आज अचल तीर्थों की बात चल तीर्थों के साथ हो रही है। मैं इन्हें गुल्लक नहीं,गुडलक कहता हूं,यहीं से तुम्हारा गुडलक शुरू होने वाला है। आज छुट्टी का दिन है, और कर्मों की छुट्टी करने के लिये,रोज कुछ राशि की तीर्थों के सहयोग के लिये जेब से छुट्टी करो।

उपाध्याय श्री विरंजन सागरजी ने कहा कि प्राचीन तीर्थों का संवर्धन,संरक्षण तीर्थक्षेत्र कमेटी अकेले नहीं कर सकती,इसमें हर व्यक्ति का दायित्व होना चाहिए। जैसे आप अपने परिवार के हर सदस्य का संरक्षण करते हैं,वैसे ही तीर्थों का संरक्षण करना भी आपका कर्तव्य है। ऐसे कई क्षेत्र हैं,जिनको देखने वाला कोई नहीं। तमिलनाडू,कर्नाटक,केरल के ऐसे अनेकों तीर्थ हैं। संकल्प लें,जा नहीं सकते,तो 5 से 10 फीसदी राशि तीर्थों की रक्षा के लिये निकाले। सहस्त्रकूट की प्रतिमा के लिये हजारों रुपये,हजारों हाथ उठ जाते हैं,पर प्राचीन तीर्थों के लिए 5 हजार भी नहीं,कहेंगे परिवार से बात करूंगा। संकल्प लें,हर साल प्राचीन तीर्थों के लिये 5 हजार रुपये दान दूंगा।

गणिनी आर्यिका श्री सौभाग्यमति माताजी ने कहा कि जितना पुण्य 100 नये मंदिर बनवाने में मिलता है,उतना ही एक प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार में। आज तीर्थों के साथ,संतों की भी रक्षा हो। नये तीर्थों पर थोड़ा-सा लगाम लगायें,प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार 5-5 समृद्धशाली साधुओं को सौंप दें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी ने कहा कि मेरा ध्येय है कि चल-अचल तीर्थों की रक्षा-संवर्धन के लिये सबका सहयोग हो,संगठित

होकर जैन ध्वजा को नई ऊंचाई तक फहरा सकें। हम संगठित हों, संगठन मजबूत हो। सरकार हमारी नहीं सुनती,क्योंकि हम आज गूंगे-बहरे हो गये हैं। तीर्थों की सुरक्षा के लिये सबको सहयोग करना होगा।

शतकोत्तर रजत महोत्सव समिति के अध्यक्ष जवाहर लाल जैन जी ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी 125 वर्षों से सेवा कर रही है। बगैर साधुओं के आशीर्वाद के इसे नहीं चला पायेंगे।

संभाजी नगर जैन पंचायत के अध्यक्ष महावीर पाटनी जी ने कहा कि निश्चित रूप से तीर्थों की रक्षा समाज की जिम्मेदारी है। तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थों की कस्टोडियन बने,मालिक नहीं। उन्होंने मंच से घोषणा की कि संभाजी नगर व आसपास के सभी 23 मंदिरों में गुल्लक रखी जाएगी। तीर्थों की वंदना नहीं कर सकते, तो उसमें रोज 2,5 रुपये डालो। इन तीर्थों की सुरक्षा,रक्षा समाज की जिम्मेदारी है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के कोषाध्यक्ष अशोक दोषी ने स्पष्ट कहा कि बिना धन के कमेटी कुछ नहीं कर सकती।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष संजय पापड़ीवालजी ने कहा कि अब हम 125 साल की ओर हैं और 9000 सदस्य हैं। सदस्यों की संख्या को बढ़ाना होगा,हर परिवार को सहयोग करना होगा।

महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष मिहिर गांधी जी ने कहा कि हमारा प्रयास महाराष्ट्र के हर मंदिर में तीर्थरक्षा गुल्लक रखने का होगा।

चैनल महालक्ष्मी ने कहा कि आज समय आ गया है कि जब हर साधु का आशीर्वाद तीर्थक्षेत्र कमेटी को मिले तथा चातुर्मास स्थापना,पंचकल्याणक व बड़े महोत्सवों में एक तीर्थरक्षा सहयोग हेतु कलश रखा जाये,जिसकी राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थों के जीर्णोद्धार में लगाये।

अपराजिता जैन ने मंगलचारण से कार्यक्रम की शुरूआत की। अनुराग जैन इंदौर द्वारा बखूबी मंच संचालन किया गया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सिद्धक्षेत्रों,कल्याणक भूमियों,अतिशय क्षेत्रों की चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। संतो,भट्टाराकों सहित हजारों श्रावकों ने उन चित्रों के माध्यम से अपने प्राचीन तीर्थों को जाना। उक्त प्रदर्शनी में अनेकों पुरुष महिलाओं के ग्रुप जो तीर्थ भ्रमण के लिए जाते रहते है वे सभी प्राचीन तीर्थों के विषय में जान कर उत्साहित हुए और हर्षित भी हुए कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इन तीर्थों के संरक्षण,संवर्धन के लिए कार्य कर रही है और कमेटी के वर्तमान पदाधिकारी जगह जगह जाकर जागरूकता ल रहे है।

# गिरनार से चार बड़ी खुशखबरी

1- 5वीं टोंक व पूरे वंदना मार्ग में लगे कैमरे, वॉयस रिकार्डिंग के साथ

२- तीर्थक्षेत्र कमेटी करायेगी भगवान अनिरुद्ध स्वामी टोंक का जीर्णोद्धार

3- 5 वीं टोंक के नीचे जिनालय के लिये ली जायेगी जगह

४- तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय खुलेगा गिरनार में

**14 जनवरी मकर संक्रांति को आचार्य श्री सुनील सागरजी से चर्चा के दौरान भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा भगवान अनिरुद्ध स्वामी की जीर्ण-शीर्ण होती टोंक के जीर्णोद्धार की सहर्ष घोषणा की, उसके अगले ही दिन आचार्य श्री ने गिरनार की वंदना के दौरान दूसरी टोंक पर शांति मंत्र का जाप किया। शीघ्र ही इस टोंक का जीर्णोद्धार शुरू होगा।**

शुभ क्षेत्र, शुभ का, शुभ भाव और सान्निध्य मिले तपस्वी संतों का तो जो कार्य और मांग दशकों से पूर्ण नहीं होती, वह चंद मिनटों में पूरे हो जाते है

शुभ दिन था मकर संक्रांति का, शुभ क्षेत्र था सिद्धक्षेत्र गिरनारजी, शुभ सान्निध्य था आचार्य श्री सुनील सागरजी महामुनिराज का और फिर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी और गुजरात अंचल के अध्यक्ष पारस जैन बज की अगुवाई में सारे काम बनते चले गये।

मकर संक्रांति को तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी व चैनल महालक्ष्मी जूनागढ़ पहुंचे, जहां गुजरात अंचल अध्यक्ष पारस जैन बज आचार्य श्री सुनील सागरजी के मंगल प्रवेश की तैयारियां देख रहे थे। हजारों यात्रियों के भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था, निर्मल ध्यान केन्द्र में की गई।

### गिरनार का वंदना मार्ग सीसीटीवी कैमरों की नजर में

आचार्य श्री के आशीर्वाद के बाद सीधा पहुंचे एसपी कलेक्टर कार्यालय में, जहां पारस जैन बज की अगुवाई में पहले एसपी सुबोध ओडेदरा, फिर कलेक्टर अनिल रानावालिया से मिले। उन्हें बताया कि आज 900 जैन बंधु 5वीं टोंक तक गये। एसपी महोदय हैरान थे, कि इतने जैन श्रावक एक यात्रा पर साथ गये\ और गड़बड़ नहीं हुई, उन्होंने अपना मोबाइल देख कर बताया कि अब पूरे वंदना मार्ग का निरीक्षण यहीं बैठे कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अब 5वीं टोंक सहित नीचे तक पूरा वंदना मार्ग सीसीटीवी कैमरों की नजर में है, वो भी साउण्ड के साथ।

### मिल बैठ कर हर विवाद का हल निकल जाएगा

कलेक्टर महोदय से साधु- संतों के लिये विशेष सुविधाओं तथा यात्रियों को सुलभ दर्शन होने पर भी तीर्थक्षेत्र कमेटी की चर्चा हुई। विवाद खत्म करने की दिशा में सौहार्दपूर्ण वातावरण सभी ने मिल बैठ कर चर्चा करने की सहमति जताई। निश्चित ही एक बार में तो नहीं, कई बैठकों के दौर में सौहार्दपूर्ण हल जरूर निकल जाएगा।

### छोटी चर्चा में निकले बड़े हल

आचार्य श्री सुनील सागरजी से तीर्थक्षेत्र कमेटी की मंच पर चर्चा हुई। आचार्य श्री ने समाज हित में स्पष्ट कहा कि मिलकर ही हल निकलेगा, विरोध करके नहीं। उन्होंने कहा कि आज दो-तीन बातों का कुछ ही समय में फैसला हो गया। जब प्रबुद्ध लोग इक्ट्ठे होते हैं, तो बड़ी मीटिंग नहीं करनी पड़ती। यहां पारस जी बज, जम्बू जी, शरद जी, राजेन्द्र जी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

### तीर्थक्षेत्र कमेटी का गिरनार में कार्यालय

आचार्य श्री सुनील सागरजी ने कहा कि जूनागढ़ गिरनार तलहटी में भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी का कार्यालय हो, ताकि जिससे यहां विशेष सुविधायें, व्यवस्थायें हो, यात्रियों से संबंधित बातों का ध्यान रखा जा सके। तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने स्थापना के 125वें वर्ष में प्रवेश से पहले अपना कार्यालय यहां खोलने जा रही है, जिसका वर्षों से इंतजार था। आज कार्यालय का आगाज है समझिये, क्योंकि कह दिया, तो कर दिया।

### दूसरी टोंक का शीघ्र जीर्णोद्धार

आचार्य श्री ने कहा कि दूसरी बात, अनिरुद्ध कुमार भगवान के चरण कितनी बार देखा, जब भी हम यात्रा करने वहां जाते, तो उसकी बुरी हालत देखते, हमने 7 - 8 यात्रायें तो कर ली हैं ,परंतु भगवान अनिरुद्ध कुमार के चरण जितनी बार देखा उसकी बुरी हालत देखी। हर बार दो मिनट के लिए जरूर बैठते है नीचे या फिर ऊपर, जाप भी जरूर करते है। यह चबूतरा बहुत उबड़-खाबड़ हो गया है अगर यही टोंक नीचे होती तो आलीशान मंदिर तक बन जाता। अब तीर्थक्षेत्र कमेटी जीर्णोद्धार करने जा रही है, इतने ऊंचे पहाड़ पर, एक सुंदर छतरी रूप आ जाये, तो भी बड़ी बात होगी। अगले ही दिन वंदना के मध्य आचार्य श्री ने सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में वहां बैठकर शांति मंत्र का जाप भी किया।

इससे पूर्व पारस बज जी ने बताया कि इस जीर्णोद्धार के लिए सरकार, प्रशासन व वन विभाग से अनुमति ले ली है, और इस कार्य के लिये जम्बू प्रसाद जी ने तत्काल अनुमति दे दी। जिसकी जैन समाज से लगातार मांग आ रही थी।

### पांचवीं टोंक के पास नेमिनाथ जिनालय

पारस बज जी ने बताया कि पांचवीं टोंक से 70-80 सीढ़ी नीचे 2600 फीट जगह पहाड़ी पर ढूंढ निकाली है, इतनी बड़ी जगह ऊपर मिलना असंभव सा है, पर 5-6 वर्ष के प्रयास से यह मिल पाई है। आचार्य श्री ने कहा कि पांचवीं टोंक पर प्रभु नेमिनाथ जी के श्री चरण तो है, वह तो है ही, लेकिन उसके नीचे की तरफ 80-90 सीढ़ी नीचे और जगह है, वहां एक चैत्यालय टाइप का जिनालय या विश्राम गृह का कुछ बने और उसमें नेमिनाथ भगवान विराजमान हो। पारसजी ने कहा बरसों से इसके लिये प्रयास कर रहे हैं। करने से काम होता है और मानने से नेमिनाथ भगवान आते हैं। इस विषय को चैनल महालक्ष्मी ने वहीं सार्वजनिक मंच से स्पष्ट किया नीचे जिनालय भगवान नेमिनाथ जी प्रतिमा व पूजा-पाठ, विश्राम आदि के लिये होगा। पांचवीं टोंक के तीर्थंकर नेमिनाथ जी के चरण यथावत वही रहेंगे।

### पंथवाद -सतंवाद को खत्म करें, एकता का परिचय दे

तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी ने उपरोक्त सभी कार्यों की सहर्ष अनुमति देते हुये कहा कि हमें संतवाद-पंथवाद को भूलना होगा और एकता का परिचय देना होगा, तभी हमारे तीर्थ बच सकेंगे। तीर्थ बचेंगे, तो हमारी संस्कृति बचेगी और संस्कृति बचेगी तो हम बचेंगे और हमारा धर्म बचेगा। आप सबको तीर्थक्षेत्र कमेटी का हर संभव सहयोग देना चाहिए, जब कमेटी आर्थिक रूप से मजबूत होगी, तभी तीर्थों पर सुविधायें व जीर्णोद्धार संभव हो सकेगा।

### शतकोत्तर रजत महोत्सव में विशेष दान

आचार्य श्री सुनील सागरजी ने जोर देकर कहा कि जम्बू प्रसाद जी की अध्यक्षता में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक शतकोत्तर रजत महोत्सव मना रही है, इसे पूरा समाज मिलजुल कर मनाये और इस वर्ष तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिये विशेष प्रयास किये जायें। विशेष कलश स्थापना हो। वर्षायोग स्थापना पर हो, विशेष आयोजनों पर हो, उस कलश की राशि सीधे तीर्थक्षेत्र कमेटी को दी जाये। विशेष आयोजनों पर एक विशेष धनराशि तीर्थों के विकास के लिये निकाले। यह कमेटी की भावना है, जो तीर्थ हमारी जीवंतता के प्रतीक हैं, इन तीर्थों का सभी लोग मिलकर संरक्षण संवर्धन करें।

# तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई कार्यालय में परमपूज्य मुनि श्री १०८ अजितसागर जी महाराज का मंगल आगमन

## तीर्थक्षेत्र कमेटी की 125 वर्षीय गौरवशाली विरासत देखकर हर्षित हुए मुनिश्री १०८ अजितसागर जी महाराज

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री १०८ अजितसागर जी महाराज, मुनि श्री १०८ निरागसागर जी महाराज एवं ऐलक श्री १०५ विवेकानंद जी महाराज ससंघ का मुंबई में धर्मप्रभावना विहार निरंतर चल रहा है। इस पावन अवसर पर मुनिसंघ श्री १००८ चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर भुलेश्वर में विराजमान रहे। इस दो दिवसीय प्रवास के दौरान मुनि श्री अजितसागर जी महाराज ससंघ का आशीर्वाद ग्रहण करने तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व मंत्री श्री खुशाल जैन (सीए) जैन तथा मुख्यप्रबंधक एवं

जैन तीर्थवंदना के संपादक श्री उमानाथ दुबे पहुंचें, उन्होंने सविनय भाव से महाराजश्री का आशीर्वाद ग्रहण करते हुए महाराज जी को तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुंबई प्रधान कार्यालय में पधारने का निवेदन किया, जिसपर मुनिश्री ने सहर्ष स्वीकृति देते हुए अपनी प्रशंसा व्यक्त की साथ ही उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी में मुख्यप्रबंधक एवं जैन तीर्थवंदना के संपादक के रूप में करीब 5८ वर्षों से निरंतर सेवाएँ दे रहे श्री उमानाथ दुबे के कार्यों की भूरी प्रशंसा करते हुए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

अगले दिवस आहारचर्या संपन्न होने के पश्चात मुनि श्री १०८ अजितसागर जी महाराज हीराबाग स्थित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रधान कार्यालय में पधारे। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा चरण प्रक्षालन कर मुनिश्री का मंगल स्वागत किया गया। महाराज श्री ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्षों के गौरवशाली इतिहास का अवलोकन कर हर्ष व्यक्त किया । उन्होंने कार्यालय में संचित 125 वर्षों के ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, पत्रिकाओं, संचालित वेबसाइट एवं अब तक के अध्यक्षों के चित्रों का बारीकी से अवलोकन कर अभी तक कमेटी के बने सभी अध्यक्षों के कार्यकाल के बारे में प्रकाश डालते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव की जानकारी प्राप्त कर आयोजन हेतु मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर मुनिश्री के साथ सीए श्री संजयराजा जैन, श्री सुरजीत जैन, श्री रामेन्द्र जैन, श्रीमती अर्चना जैन, श्री अनुज जैन हीराबाग धर्मशाला के प्रबंधक कैप्टन साहब सहित तीर्थक्षेत्र कमेटी के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

## भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
की प्रेरणा से
## दि. जैन तीर्थ निर्देशिका प्रकाशन समिति, इन्दौर
द्वारा प्रवर्तित
# दिगम्बर जैन तीर्थों हेतु 3 विशिष्ट पुरस्कार

**प्रायोजक : श्री हंसमुख जैन गॉधी, राष्ट्रीय मंत्री - तीर्थक्षेत्र कमेटी, इन्दौर**

**पुरस्कारों की विषय परिधि निम्नवत् हैः-**

**श्रेष्ठ तीर्थ प्रबन्धन हेतु - क्षेत्र पर सौन्दर्यीकरण, स्वच्छता, भोजन एवं सम्यक् आवासीय सुविधाओं के विकास एवं शासकीय अभिलेखों के सम्यक् संधारण हेतु।**

**श्रेष्ठ तीर्थ विकास हेतु - क्षेत्र के प्राचीन जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं पुरातत्व के संरक्षण तथा नवनिर्माण एवं विकास कार्यों हेतु।**

**श्रेष्ठ तीर्थ प्रचार हेतु - क्षेत्र के प्रचार - प्रसार, प्रकाशन एवं सोशल मीडिया प्रबन्धन हेतु।**

प्रत्येक पुरस्कार के अन्तर्गत क्षेत्र को रू. १,११,०००/०० की सम्मान राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदान की जायेगी। क्षेत्र के वर्तमान पदाधिकारियों को निर्धारित प्रपत्र पर सप्रमाण आवेदन करना होगा। एक से अधिक वर्ग में आवेदन करने पर पृथक–पृथक संलग्नकों सहित फॉर्म भरने होंगे। क्षेत्र का भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध होना अनिवार्य है।

**पुरस्कारों का निर्णय निम्नांकित निर्णायक मंडल द्वारा किया जायेगा।**

1. **श्री हंसमुख जैन गॉधी, इन्दौर, प्रायोजक एवं अध्यक्ष**
2. **श्री एन. के. सेठी, (I.A.S.) जयपुर, सदस्य**
3. **न्यायमूर्ति विमला जैन, भोपाल, सदस्य**
4. **डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर, संयोजक**

निर्धारित प्रारूप में प्रविष्टियॉ सादर आमंत्रित हैं। प्रविष्टि प्राप्त होने की अन्तिम तिथि–३१.०३.२६ है।


**हंसमुख जैन गॉधी**
**अध्यक्ष**
93021 03513
hasmukhjaingandhi@gmail.com

**डॉ. अनुपम जैन**
**महामंत्री**
95898 83822
anupamjain3@rediffmail.com

**कार्यालय सम्पर्क - 211, देवधर काम्पलेक्स, छावनी, इन्दौर 452001, मो. 93021 03513**

AVAILABLE SIZES : 800X2400MM | 1200X1800MM | 800X1600MM | 600X1200MM | 600X600MM | 600X300MM | 200X400MM | 400X400MM | 300X300MM | 200X200MM | 100X100MM

**Pavit Ceramics Pvt. Ltd.**

303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com **Toll Free : 1800 233 3366** (9.30am to 6.30pm)

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi February 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

*With Compliments*

From:

GFL

# GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

 Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.